

हाईवे पर स्पीड का रोमांच मुसीबत में बदल गया: टाटा टियागो कार सोला ओवरब्रिज पर ड्रिवाइडर से टकराकर पलट गई!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। अहमदाबाद का सबसे बिजी और स्पीड मार्क माना जाने वाला एस.जी. हाईवे एक बार फिर हदसे से दहल गया है। एस.जी. 1 पुलिस स्टेशन की हद में सोला ओवरब्रिज पर, फुल स्पीड में जा रही टाटा टियागो कार के ड्राइवर का स्टीयरिंग व्हील से कंट्रोल खो गया और कार जोरदार धमाके के साथ ड्रिवाइडर से टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार सड़क पर पलट गई। हादसे से बिज से गुजर रहे दूसरे गाड़ी चलाने वालों में भारी भगदड़ और अफ़रा-तफ़री मच गई। कार पलटी देख लोगों की जान खतरे में मिली जानकारी के मुताबिक, टाटा टियागो कार नंबर GJ 11 BH 3977 (GJ 11 BH 3977) सोला ओवरब्रिज के ऊपर से गुजर रही थी। उसी दौरान ड्राइवर ने अचानक कार पर से कंट्रोल खो दिया और कार सीधे सड़क के बीच ड्रिवाइडर से टकरा गई। हादसे के बाद कार हवा में उछल गई और सड़क पर पलट गई। कार की हालत देखकर एक बार तो ऐसा लगा कि अंदर बैठे लोगों की जान बचाना मुश्किल होगा, लेकिन कहते हैं न कि ‘जो राम रखे सो चर्चे’... खुशकिस्ती से इस हादसे में किसी की हताहत होने की खबर नहीं है। कार ड्राइवर को सिर्फ मामूली चोट आई, जिसे चमककारी बचाव कहा जा सकता है। एस.जी. हाईवे पर कुछ देर के लिए गाड़ियों की लंबी कतारें लग गई और ट्रैफ़िक जाम की स्थिति बन गई। घटना की सूचना मिलते ही एस.जी. 1 थाने की पुलिस का काफिला तुरंत मौके पर पहुंचा। आस-पास के लोगों की मदद से पुलिस ने घायल ड्राइवर को कार से निकालकर फर्स्ट एड के लिए शिफ्ट किया और क्रोेन की मदद से एक्सिडेंट वाली कार को सड़क के किनारे करके ट्रैफिक को आसान बनाया। फिलहाल, स.त्. 1 पुलिस ने कानूनी जांच की है कि एक्सीडेंट कार की ओवरस्पीडिंग की वजह से हुआ या किसी और टेक्निकल खराबी की वजह से। हालांकि, इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि S.G. हाईवे पर गाड़ी चलाते समय थोड़ी सी भी लापरवाही जानलेवा साबित हो सकती है।

हेल्थ ही असली दौलत है: अहमदाबाद में ‘फिट इंडिया मिशन’ के तहत एक बड़ा साइकिलिंग प्रोग्राम हुआ

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। ‘हेल्दी शरीर ही सबसे बड़ा सुख है’ इस कहावत को सच करने के लिए अहमदाबाद शहर में ‘फिट इंडिया मिशन’ के तहत एक बड़ा साइकिलिंग प्रोग्राम हुआ। इस प्रोग्राम में बड़ी संख्या में लोगों ने जोश के साथ हिस्सा लिया और आने वाली पीढ़ी को एक हेल्दी और प्रदूषण-मुक्त भारत देने का पक्का इरादा किया। इस साइकिलिंग इवेंट का मुख्य मकसद लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी में फिजिकल एक्सरसाइज की अहमियत को बढ़ाना और पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारी को पूरा करना था।अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा आयोजित इस खास पब्लिक अवेयरनेस प्रोग्राम में अहमदाबाद के मेयर हितेश बारोट और स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन कमलेश पटेल खास तौर पर मौजूद थे। खास लोगों ने खुद साइकिल चलाकर लोगों का जोश दोगुना कर दिया। इस मौके पर मेयर हितेश बारोट ने कहा कि आज के मॉडर्न जमाने में हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाना बहुत जरूरी है और साइकिलिंग इसका सबसे अच्छा जरिया है। वहीं, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन कमलेश पटेल ने भी लोगों से ‘फिट इंडिया’ के इस शानदार मास मूवमेंट से जुड़ने की अपील की। सुबह के खुशनुमा माहौल में हुई इस साइकिल रैली में ‘हेल्थ ही असली दौलत है’ का नारा गूंज रहा था। साइकिलिंग से न सिर्फ शरीर फिट रहता है, बल्कि गाड़ियों से होने वाला एयर पॉल्यूशन भी कम होता है, जो एनवायरनमेंट के लिए वरदान है। आज के इवेंट ने अहमदाबाद के लोगों को हफ्ते में कम से कम एक दिन साइकिल चलाकर एनवायरनमेंट बचाने में पार्टनर बनने का एक सुंदर मौैसेज दिया। इस रैली में युवाओं, बड़ों और खासकर बच्चों ने बड़े जोश के साथ साइकिल चलाई और माहौल को जोश से भर दिया। प्रोग्राम के आखिर में, मौजूद सभी लोगों ने अपने परिवार और आस-पास के लोगों को फिटनेस के प्रति जागरूक करने और भारत को एक मजबूत देश बनाने में योगदान देने का पक्का इरादा किया।

BJP का गढ़’ मानी जाने वाली मंजलपुर सीट पर पटेल बनाम OBC की लड़ाई, किसे फायदा?



महानगर मेट्रो ब्यूरो

वडोदरा। गुजरात की पॉलिटिक्स में सबसे सुरक्षित और ‘BJP का अभेद्य किला’ मानी जाने वाली वडोदरा की मंजलपुर असेंबली सीट पर इस बार चुनावी माहौल गरमा गया है। इस बार, ट्रेडिशनली BJP का गढ़ मानी जाने वाली इस सीट पर लड़ाई सिर्फ पार्टियों के बीच नहीं है, बल्कि यह ‘पटेल बनाम OBC के हाई-वोल्टेज जातिगत समीकरणों में’ बदल गई है। कांग्रेस के खेले गए एन दंव और BJP की अंदरूनी खींचतान के बीच, पूरे गुजरात की निगाहें इस बात पर हैं कि इस बार मंजलपुर की जनता किसके सिर ताज पहनाएगी। BJP के गढ़ में जातिवाद का नया गणित मांजलपुर सीट दशकों से BJP का साथ देती आ रही है। लेकिन इन बार समीकरण बदल गए हैं। पाटीदार वोट और OBC (तरवाड़ी, राम, क्षत्रिय और दूसरी OBC जातियां) वोट इस सीट पर अहम भूमिका निभाते हैं। अगर BJP पाटीदार चेहरे पर दंव लगाती है, तो ज्यादातर OBC वोटरों में नाराज़गी फैल सकती है और अगर OBC चेहरे को टिकट मिलता है, तो पाटीदार लॉबी नाराज़ होने की संभावना है। इस बार कांग्रेस ने इस कमजोर नस पर मजबूत पकड़ बना ली है। कांग्रेस ने इस सीट पर सत्ताधारी पार्टी के पारंपरिक वोट बैंक में संघ लगाने के लिए स्थानीय तौर पर मजबूत OBC या पाटीदार फ्रैंकटर को भुनाने की योजना बनाई है। कांग्रेस का हिसाब साफ है: अगर BJP के टिकट बंटवारे में जरा सी भी चूक हुई, तो नाराज ग्रुप के वोट सीधे उसकी जेब में जाएंगे। पॉलिटिकल एनालिस्ट के मुताबिक, अगर OBC वोटर एक साथ वोट करते हैं, तो BJP की अब तक की एकतरफ़ा जीत का रिकॉर्ड खतरे में पड़ सकता है। वडोदरा BJP में पिछले कुछ समय से चल रही अंदरूनी खींचतान, गुटबाजी और टिकट के दावेदारों की लंबी लिस्ट, मंजलपुर में BJP के लिए चिंता का विषय बन गई है। पुराने जोगी अपनी पकड़ छोड़ने को तैयार नहीं हैं, जबकि वीरू चहेरे नया मौका ढूँढ़ रहे हैं। ऐसे में अगर पटेल बनाम OBC की इस सीधी लड़ाई में पार्टी के अंदर ही ‘धोखा’ होता है, तो इसका सीधा फ़ायदा कांग्रेस को मिल सकता है। मंजलपुर की लड़ाई अब रोमांचक मोड़ पर है। BJP अपने संगठन की ताकत और BJP मोदी के चेहरे के दम पर गढ़ बचाने की जी-तोड़ कोशिश कर रही है, जबकि कांग्रेस जाति के समीकरण बिठाकर बड़ा उलटफेर करने की कोशिश कर रही है। इस अभेद्य किले को गिरा देना? टिकटों की घोषणा के बाद यह लड़ाई कितनी तीखी होती है, इस पर हमारी नजर रहेगी।

करजण में सत्ता के नशे में चूर नेताओं के खिलाफ जनता के गुस्से का ज्वालामुखी क्या BJP कोई वॉशिंग मशीन है? अगर ऐसे नेता को जनादेश मिला जिसने हजारों परिवारों के घरों में अंधेरा कर दिया है

जागरूक जनता करजण से कमल का सफाया कर देगी!

घोटालेबाज जयदीप सिंह चौहान को घर लाने का बिगुल बजा



करजण/वडोदरा। वडोदरा जिला BJP और करजण तालुका की राजनीति में एक बड़ा धमाका हुआ है। सत्ता के नशे में चूर नेताओं की कथनी और करनी में फर्क, जब वे गरीबों के मुँह से निवाला छीनते हैं, तो जनता के भयानक गुस्से का जीता-जागता सबूत है। हाईवे नंबर 48 पर पोर के पास मॉडर्न कंपनी को रातों-रात बंद करने के पीछे कौन सा काला राज छिपा है और वडोदरा जिला BJP के जनरल सेक्रेटरी और करजण APMC के चेयरमैन जयदीप सिंह चौहान ने इसमें क्या खेल खेला है, इसकी सनसनीखेज डिटेल्स अब खुब चर्चा में हैं। मॉडर्न कंपनी का डूबना: हजारों परिवारों के घरों में अंधेरा, नेताजी के बंगले में लक्ष्मीजी की मेहरबानी! सूत्रों से मिली चौकाने वाली जानकारी के मुताबिक, पोर के पास मॉडर्न कंपनी जब खूब फल-फूल रही थी, तो यह करजण तालुका और खासकर बामन गांव के सैकड़ों लोकल युवाओं की रोजी-रोटी का मुख्य जरिया थी। इसी कंपनी में जयदीप सिंह चौहान ।क्रमेेनजर जैसे जिम्मेदार पद पर बैठे थे। लोकल लोगों का सीधा और गंभीर आरोप है कि अपने ही गांव के बेटों के हितों की रक्षा करने के बजाय, अपनी पावर और पद का इस्तेमाल करके कंपनी को

फिलहाल उनके पास सत्ता की दो ताकतें हैं

1. वडोदरा जिला BJP संगठन का जनरल सेक्रेटरी

2. करजण APMC का मौजूदा चेयरमैन

लोग खुलेआम पूछ रहे हैं कि क्या कांग्रेस से BJP में शामिल होने से आपको घोटाले करने का ऑफिशियल लाइसेंस मिल जाता है? क्या BJP कोई वॉशिंग मशीन है जिसमें शामिल होते ही नेता के सारे काले कारनामे धुल जाते हैं? क्या वडोदरा BJP में एक भी साफ, ईमानदार और पॉपुलर चेहरा नहीं बचा है या सिर्फ विवादित नेताओं को, जिन्हें बार-बार जनता का गुस्सा झेलना पड़ा है, अहम कुर्सियां दी जा रही हैं? सत्ता के

सिस्टमैटिक तरीके से बंद कर दिया गया। पूरे करजण में आरोपों की चर्चा है कि कंपनी बंद करने की आड़ में करोड़ों रुपये की कीमती मशीनरी और स्कूप को गैर-कानूनी तरीके से बेचने के लिए कंपनी के अंदर एक बड़ा घोटाला किया गया। नतीजा यह हुआ कि रातों-रात गरीब और मिडिल क्लास परिवारों के हजारों बेटे सड़कों पर आ गए और उनके घरों में चूल्हा जलना भी मुश्किल हो गया। दूसरी तरफ, कंपनी भले ही डूब गई, लेकिन ।क्रमेेनजर के तौर पर जयदीप सिंह चौहान रातों-रात अरबपतियों की लिस्ट में शामिल हो गए। अपने ही गांव के नौजवानों के साथ हुए इस भयानक धोखे की वजह से गुस्साए गांववालों ने पहले नेताजी के घर के बाहर और आम सड़कों पर जमकर हंगामा किया और जयदीप सिंह के खिलाफ नारे लगाकर अपना गुस्सा निकाला।

BJP की ‘वॉशिंग मशीन’ और दो पतों का दोगलापन

करजण तालुका के लोग अब BJP की प्रदेश लीडरशिप

पर्यावरण के नाम पर सरपंच की तानाशाही: डभोई के फर्टीकुई गांव में बिना इजाज़त 30 साल पुराने हरे-भरे पेड़ काट दिए गए

सरकार के ‘पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ’ के नारे की पंचायत ने ही पोल खोली: जागरूक गांववाले ममलतदार ऑफिस पहुंचे, और गुनाह छिपाने के लिए दोपहर 3 बजे लेटर पैड पर झूठ फैलाया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

डभोई। एक तरफ राज्य और केंद्र सरकारों ‘एक पद मां के नाम’ और ‘पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ’ जैसे लुभावने नारे लगाकर और विज्ञापनों पर करोड़ों रुपये खर्च करके प्रकृति की रक्षा की बात करती हैं। लेकिन वडोदरा जिले के डभोई तालुका के फर्टीकुई गांव में एक शर्मनाक मामला सामने आया है कि कानून के रक्षक ही भ्रष्टक बन गए हैं। गांव के बस स्टेशन रोड पर विकास मंडली के पास 4 (चार) बड़े, हरे, 30 साल पुराने, आस्था जैसे और ऑक्सिजन देने वाले गुलमोहर के पेड़ों को बिना किसी एडमिनिस्ट्रेटिव परमिशन या प्रस्ताव के जमीन पर गिरा दिया गया है। गांव के जागरूक लोगों ने सरपंच के इस आदेश के खिलाफ आवाज उठाई है, जिससे पूरे तालुका में भारी हंगामा हुआ है। गांव के जागरूक नागरिक पटेल तितेश देवेन्द्रभाई और पटेल रवि कुमार महेशभाई ने इस गैर-कानूनी और पर्यावरण विरोधी काम के खिलाफ हिम्मत दिखाई। उन्होंने ठीक दोपहर 12:00 बजे डभोई ममलतदार ऑफिस में पेड़ों की गैर-



कानूनी कटाई के बारे में एक लिखित एप्लीकेशन दी और कानूनी कार्रवाई की मांग की। जैसे ही इस ममलतदार ऑफिस की खबर सरपंच तक पहुंची, पंचायत अधिकारियों के पैरों तले से जमीन खिसक गई! अपनी जान बचाने के लिए सरपंच तुरंत पंचायत में बैठे और जल्दबाजी में दोपहर 3:00 बजे के बाद प्रस्ताव पास कर दिया और 18 जुलाई को एक लेटर पैड पर लिखकर बताया कि ‘पंच ने सिर्फ खुद आकर टर्नियां काटी हैं’। लेकिन असलियत यह है कि पेड़ टर्नियों से नहीं, बल्कि तने से गायब हुए हैं। जागरूक नागरिकों का गुस्सा: पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग इस मामले में गांव के एक और जागरूक नागरिक मौलिक जशुभाई पटेल ने अपना गुस्सा जाहिर करते हुए कहा कि यह

बहुत निंदनीय है कि गांव के जिम्मेदार सरपंच इस तरह से पेड़ हटा रहे हैं, इससे पर्यावरण को बहुत नुकसान हुआ है। वहीं मयूरभाई पटेल ने भी गुस्से में कहा कि ऐसे फालतू हरे पेड़ों को काटने में शामिल सभी लोगों पर फॉरेस्ट एक्ट और कानून का अलग-अलग धाराओं के तहत केस दर्ज कर जेल भेजा जाना चाहिए। अगर कोई आम नागरिक अपने घर के आंगन से भी बिना इजाजत पेड़ काटता है, तो फॉरेस्ट डिपार्टमेंट और प्रशासन जुर्माना लगाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। तो फिर

मानसून का बहाना बनाकर सारे पेड़ उखाड़ दिए!

मिली जानकारी के मुताबिक, बस स्टेशन रोड पर विकास मंडली के पास करीब 30 साल पुराने, छोटें गुलमोहर के पेड़ थे। मानसून के मौसम को ध्यान में रखते हुए, पेड़ों की सिर्फ डलियों (ऊपरी हिस्से) को काटने की जरूरत थी। लेकिन



हिसाब लगाया है कि सिर्फ सीमेंट-इंट की दीवारें बनाकर लाखों का बिल पास हो जाएगा, लेकिन इस जमा हुए पानी का आखिर में डिस्पोजल कहाँ और कैसे होगा, इसका कोई खास प्लान नहीं है! इससे पहले, लाखों की लागत से नांदोडी बगोल से वेग तक ऐसा ही एक डैम बनाया गया था, जो पूरे साल बंद रहता था और आस-पास की सोसाइटीयों मानसून में डूब जाती थीं। पुराने पाप से सीखने के बजाय, प्रशासन फिर से उसी सरकारी पैसे को धुर्

अहमदाबाद, (सोमवार)

अहमदाबाद, (सोमवार)

‘महानगर मेट्रो’ का आखिरी राग: जनता अब जवाबदेही मांगती है!

करजण विधानसभा के लोगों को BJP क्या मौैसेज देना चाहती है? क्या सत्ताधारी पार्टी की नजर में अन्नदाता किसानों की कोई अहमियत नहीं है? अपने भाषणों में अनुशासन का वादा करने वाली पार्टी इतनी बड़ी गडबड़ियों के सामने चुप क्यों है? ऐसे नेताओं की वजह से ही, जिन्होंने करोड़ों रुपये की बेनामी प्रॉपर्टी बनाई है, आज जमीनी कार्यकर्ताओं और जनता के बीच BJP की इमेज खराब हो रही है। जनता अब नेताओं की गुलाम या चरवाहे नहीं रही। हजारों युवाओं के पेट पर लात मारने वाले और सत्ता के दम पर अपने ही गांव की जनता को धोखा देने वाले नेताओं को घर वापस लाने का बिगुल करजण की जनता ने फूंक दिया है। अब देखना यह है कि BJP संगठन समय रहते जागकर किसी साफ़-सुथरे उम्मीदवार को जनादेश देता है या अपने ही प्यारे घोटालेबाज नेता के मोह में डूबकर और करजण पंथक से BJP का वजूद मिटाकर बहुत बड़ा राजनीतिक नुकसान उठाता है! जनता का गुस्सा चरम पर है और जनता अब ब्याज समेत हिसाब मांगने को तैयार है!

महंगाई का बड़ा धमाका: अडानी गैस ने कमरतोड़ दाम बढ़ाए, गुजरात में CNG 90 प्रति kg के पार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। गुजरात के लोगों पर महंगाई का एक और बड़ा और कमरतोड़ चाबुक लगा है। मिडिल क्लास और गाड़ी चलाने वालों की जब खाली करने के लिए अडानी गैस ने रातों-रात CNG के दाम में अचानक बड़ोतरी कर दी है। इस नए झटके के साथ, गुजरात के कई शहरों में CNG के दाम अब ७90 प्रति ग्रह के ऐतिहासिक लेवल को पार कर गए हैं। जिन लोगों ने पेट्रोल और डीजल की ऊंची कीमतों से बचने के लिए अपनी गाड़ियों में CNG किट लगवाने के लिए लाखों रुपये खर्च किए, वे अब मुंह लटकाए बेबस खड़े हैं। अडानी गैस के इस खतरनाक फैसले का सीधा और खतरनाक असर मिडिल क्लास, मजदूर वर्ग और खासकर लाखों गरीब रिक्षा चलाने वालों पर पड़ेगा। रोज कमाने वाले रिक्षा चलाने वालों के लिए अब अपना घर चालाना मुश्किल हो जाएगा। CNG के दाम बढ़ते ही सड़कों से लेकर जरूरी चीजों के ट्रान्सपोर्टेशन का खर्च बढ़ जाएगा, जिसका बोझ एक बार फिर सीधे आम कंज्यूमर पर पड़ेगा। यानी यह दाम बड़ोतरी सिर्फ गैस तक ही सीमित नहीं है, इससे इनफ्लेयरेशनली पूरे मार्केट में महंगाई की नई लहर आएगी। एक तरफ़ सरकार बड़े-बड़े विज्ञापन देकर जनता को प्रदूषण-मुक्त ‘ग्रीन एनर्जी’ और CNG गाड़ियां इस्तेमाल करने के लिए बढ़ावा देती है, तो दूसरी तरफ़ प्राइवेट कंपनियों को जनता को लूटने का खुला लाइसेंस दिया जाता है! जब इंटरनेशनल मार्केट में कूड़ या गैस के दाम कम होते हैं, तो कंपनियां लालच में इसका फ़ायदा जनता तक पहुंचाती हैं, लेकिन मौका मिलते ही कंज्यूमर को निचोड़ लिया जाता है।

पॉलिटिकल एनालिसिस: राम मंदिर डोनेशन चोरी के मुद्दे पर राहुल गांधी की रहस्यमयी चुप्पी

तया कांग्रेस ने मोदी और RSS पर धकेलने का सबसे बड़ा मौका गंवा दिया?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। देश के करोड़ों हिंदुओं की आस्था अयोध्या राम मंदिर के बनने और उसकी पवित्रता से जुड़ी है। लेकिन पिछले कुछ सालों से सोशल मीडिया और पॉलिटिकल गलियारों में चर्चा का विषय बने राम मंदिर के डोनेशन में गंभीर चोरी और कथित घोटालों के मुद्दों ने पूरे देश को चौंका दिया है। इस पूरे विवाद में सबसे हरानी की बात यह है कि विश्व के अग्रिम लीडर राहुल गांधी की तरफ से इस मुद्दे पर कोई ऑफिशियल या कड़ा बयान सामने नहीं आया है। पॉलिटिकल एनालिस्ट का मानना ​​है कि राहुल गांधी ने साफ शब्दों में PM मोदी और RSS को घेरने का एक बड़ा मौका गंवा दिया है।

RSSवालों पर सीधे आरोप, लेकिन राहुल गांधी चुप क्यों हैं?

राम मंदिर ट्रस्ट और उसके आस-पास के जमीन के सौदां और डोनेशन के पैसे के मैनेजमेंट में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और खूंतिंग पार्टी से सीधे जुड़े कुछ लोकल नेताओं और लोगों के नाम चर्चा में आए। RSS और BJP, जो खुद को कल्चर, डिस्प्लिन और लॉयल्टी का सिंबल मानते हैं और हिंदुत्व के अकेले कॉन्ट्रक्टर बने घूमते हैं, इस मुद्दे पर निशाने पर आ सकते थे। अगर राहुल गांधी ने पॉलिंगमेंट से लेकर सड़क तक इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाया होता, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी पूरी सरकार, जो राम मंदिर बनाने का पूरा क्रेडिट अपने सिर पर लिए घूमते हैं, डिफेंसिव मोड में चले जाते। पॉलिटिकल पंडितों का कहना ​​है कि कांग्रेस और राहुल गांधी को शायद डर था कि अगर वे राम मंदिर के मुद्दे पर ज्यादा अग्रिमिव हूए, तो BJP से फिर से ‘एंटी-राम’ या ‘एंटी-हिंदू’ बतاکर हिंदू वोटों का पोलराइजेशन कर देगी। अपनी ‘सॉफ्ट हिंदुत्व’ इमेज बचाने के लिए कांग्रेस ने आस्था से जुड़े अरबों रुपये के चंदे में भ्रष्टाचार के इस मुद्दे को अनसुलझा रहने दिया। लेकिन सवाल यह है कि अगर राम के नाम पर जनता से इस्तेमाल करके काम को लकड़ी के टुकड़े की जैसा बना रहा है। महानगर मेट्रो ‘न्यूज’ सीधा सवाल पूछता है - राहुल गांधी बार-बार अडानी-अंबानी या संविधान के मुद्दे पर PM मोदी पर हमला करते हैं, तो राम मंदिर के चंदे की चोरी जैसे सेंसिटिव मुद्दे पर उन्हें सौंप क्यों सूंघ गया? क्या कांग्रेस अब भी BJP की पिच पर खेलने से डرتी है?



संसद का मानसून सत्र : लोकतंत्र का महायुद्ध या राष्ट्रीय सहमति का महापर्व ?



पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

संसद किसी एक दल,गठबंधन या सरकार की नहीं,बल्कि भारत की जनता की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था है। मतभेद लोकतंत्र का स्वाभाविक गुण हैं,परन्तु संवाद उसका प्राण है।यदि यह मानसून सत्र राजनीतिक संघर्ष के बीच भी राष्ट्रीय सहमति का मार्ग प्रशस्त करता है,तो यह भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का नया अध्याय सिद्ध होगा।यदि संवाद की जगह केवल टकराव ले लेता है,तो इतिहास इसे एक खोए हुए अवसर के रूप में भी दर्ज करेगा। लोकतंत्र की वास्तविक विजय सत्ता की नहीं,बल्कि संसद की गरिमा,संविधान की प्रतिष्ठा और जनविश्वास की विजय होती है।

सर्वदलीय बैठक से शुरू हुआ राजनीतिक संग्राम,महत्वपूर्ण विधेयकों,संवैधानिक विमर्श, परिसीमन,महिला आरक्षण, भ्रष्टाचार और जनसरोकारों के मुद्दों पर सत्ताझड़िपक्ष की निर्णायक परीक्षा...

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संसद है।संविधान निमार्ताओं ने संसद को केवल कानून बनाने की संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्रीय संवाद, जनाकांक्षाओं की अभिव्यक्ति और सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने वाले सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच के रूप में स्थापित किया।संसद की गरिमा केवल सत्ता पक्ष के बहुमत से नहीं,बल्कि एक सशक्त,जागरूक और उत्तरदायी विपक्ष से भी निर्मित होती है।लोकतंत्र का सौंदर्य इसी संतुलन में निहित है।सरकार जनादेश का प्रतिनिधित्व करती है,जबकि विपक्ष जनमत की निगरानी करता है।दोनों की सक्ति और रचनात्मक भूमिका ही संसदीय लोकतंत्र को जीवंत बनाती है।इसी लोकतांत्रिक परंपरा को सुदृढ़ बनाए रखने के उद्देश्य से प्रत्येक संसदीय सत्र से पूर्व केन्द्र सरकार सर्वदलीय बैठक आयोजित करती है।यद्यपि यह संविधान द्वारा अनिवार्य नहीं है, फिर भी दशकों से विकसित यह संसदीय परम्परा सरकार और विपक्ष के बीच संवाद का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम रही है।इस बैठक में आगामी सत्र की कार्ययोजना,विधायी प्राथमिकताओं,जनहित से जुड़े मुद्दों तथा सदन को व्यवस्थित और सुचारु रूप से चलाने पर विचार-विमर्श किया जाता है। लोकतंत्र में संवाद की यह परम्परा ही राजनीतिक मतभेदों की संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर बनाए रखने का आधार बनती है।20 जुलाई से प्रारम्भ हुए संसदीय मानसून सत्र की शुरूआत इस बार सहमति के वातावरण में नहीं,बल्कि तीखे राजनीतिक मतभेदों के साथ हुई है।सत्र से पूर्व आयोजित सर्वदलीय बैठक में आम आदमी पार्टी,तृणमूल कांग्रेस तथा ईडिया गठबंधन के कई दलों ने उन संसदों की आमंत्रित किए जाने पर आपत्ति जताई,जिन्होंने अपनी मूल राजनीतिक पार्टी से अलग होने की घोषणा की है।अथवा जिनकी स्थिति दल-बदल विरोधी कानून के अंतर्गत अभी लोकसभा अध्यक्ष के समक्ष विचारार्थी है।विपक्ष ने इसे संसदीय मर्यादाओं के विपरीत बताते हुए बैठक का बहिष्कार किया। सरकार का पक्ष है कि निर्मंत्रण संसदीय अभिलेखों और उपलब्ध आधिकारिक स्थिति के आधार पर भेजे गए हैं तथा इसमें किसी प्रकार की प्रक्रिया का उल्लंघन नहीं हुआ है।यह विवाद केवल एक बैठक तक सीमित नहीं है।इसके पीछे भारतीय राजनीति में लगातार बढ़ता अविश्वास,दल -बदल की घटनाएं, गठबंधनों का विघटन,राजनीतिक ध्रुवीकरण तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं की निष्पक्षता को लेकर उठ रहे प्रश्न भी जुड़े हैं।विपक्ष का आरोप है कि सत्तारूढ़ दल विपक्ष को कमजोर करने की दीर्घकालिक राजनीतिक रणनीति पर कार्य कर रहा है।सरकार इन आरोपों को सिर से खारिज करते हुए कहती है कि लोकतंत्र में प्रत्येक निर्वाचित जनप्रतिनिधि को कानून के दायरे में राजनीतिक निर्णय लेने का अधिकार है तथा दल- बदल से जुड़े मामलों का अंतिम



निर्णय संविधान की दसवीं अनुसूची के अनुसार संबंधित अध्यक्ष अथवा सभापति ही करते हैं।इस बार मानसून सत्र का महत्त्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि सरकार अनेक महत्वपूर्ण विधेयकों को संसद में प्रस्तुत करने अथवा पारित करने की तैयारी में है।संसद की उपलब्ध कार्यसूची और सरकारी संकेतों के अनुसार आयकर(संशोधन) विधेयक, सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्यम विकास(संशोधन) विधेयक, जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) विधेयक,सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने संबंधी विधेयक, राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण (संशोधन)विधेयक तथा विदेशी अंशदान (विनियमन)अधिनियम में संशोधन जैसे विषय सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल हैं। हालांकि संसद की कार्यसूची गतिशील होती है और कार्यमंत्रणा समिति अथवा सरकार के निर्णय के अनुसार इसमें परिवर्तन,नए विधेयकों का समावेश अथवा प्राथमिकताओं का पुनर्निर्धारण भी संभव है।सरकार का दावा है कि इन विधेयकों का उद्देश्य प्रशासनिक सुधार,न्यायिक दक्षता,कर व्यवस्था का सरलीकरण,निवेश को प्रोत्साहन, सुशासन तथा पारदर्शिता को और अधिक सुदृढ़ करना है।सरकार का यह भी कहना है कि विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए विधायी सुधारों की गति बनाए रखना समय की आवश्यकता है।यही कारण है कि मानसून सत्र को सरकार अपने तीसरे कार्यकाल के सबसे महत्वपूर्ण विधायी सत्रों में से एक मान रही है।दूसरी ओर राजनीतिक विमर्श का सबसे संवेदनशील विषय संविधान संशोधन,परिसीमन तथा महिला आरक्षण का प्रभावी क्रियान्वयन बना हुआ है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम संसद से पारित हो चुका है,किन्तु उसका वास्तविक क्रियान्वयन नई जनगणना और परिसीमन की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद ही संभव है।विपक्ष का आरोप है कि महिला आरक्षण को तत्काल लागू करने के बजाय भविष्य की प्रक्रिया से जोड़ दिया गया है। सरकार का कहना है कि संविधान के वर्तमान प्रावधानों के अंतर्गत परिसीमन के बिना आरक्षण लागू करना संभव नहीं है।स्पष्ट है कि यह विषय राजनीतिक बहस के साथ-साथ संवैधानिक व्याख्या

का भी प्रश्न बन चुका है।परिसीमन आने वाले वर्षों की भारतीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण संवैधानिक विषय बनता दिखाई दे रहा है। जनसंख्या के आधार पर लोकसभा क्षेत्रों के पुनर्गठन से राज्यों के संसदीय प्रतिनिधित्व में परिवर्तन की संभावना है।दक्षिण भारत के अनेक राज्यों और क्षेत्रीय दलों ने पहले ही आशंका व्यक्त की है कि जनसंख्या नियंत्रण में सफलता प्राप्त करने वाले राज्यों की प्रतिनिधित्व के स्तर पर नुकसान उठाना पड़ सकता है।दूसरी ओर उत्तर भारत के राज्य समान जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। इसलिए परिसीमन केवल चुनावी गणित का विषय नहीं, बल्कि संघीय ढाँचे,क्षेत्रीय संतुलन और राष्ट्रीय राजनीतिक संरचना से जुड़ा संवेदनशील प्रश्न बन गया है।मानसून सत्र में विपक्ष की रणनीति भी लगभग स्पष्ट दिखाई दे रही है।विपक्ष संसद के भीतर सरकार को भ्रष्टाचार,बेरोजगारी, महंगाई,कृषि संकट,राज्यों के अधिकार,संवैधानिक संस्थाओं की निष्पक्षता,जॉच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग,दल-बदल, सामाजिक न्याय तथा महिला आरक्षण के क्रियान्वयन जैसे विषयों पर घेरने की तैयारी में है। इसके अतिरिक्त लद्दाख को संवैधानिक संरक्षण,छठी अनुसूची के प्रावधानों तथा पर्यावरणीय संरक्षण के मुद्दे भी लेंकर सैन्य वांगचुक द्वारा चलाए गए आंदोलन को भी विपक्ष राष्ट्रीय विमर्श का विषय बनाने का प्रयास करेगा।सीमावर्ती क्षेत्रों का विकास, पर्यावरणीय संतुलन और स्थानीय जनप्रतिनिधित्व अब केवल क्षेत्रीय मुद्दे नहीं,बल्कि राष्ट्रीय नीति के अभिन्न अंग बन चुके हैं।भ्रष्टाचार का प्रश्न भी इस सत्र में प्रमुखता से उठ सकता है।विपक्ष विभिन्न सरकारी निर्णयों, सार्वजनिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली तथा राजनीतिक जवाबदेही को लेकर सरकार से प्रश्न पूछने की तैयारी में है।वहीं सरकार डिजिटल भुगतान, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण,सरकारी खरीद की ई-प्रणाली, जीएसटी, डिजिटल प्रशासन तथा तकनीक आधारित पारदर्शिता को भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपनी उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत कर रही है। स्वाभाविक है कि इस विषय पर सत्ता और विपक्ष के बीच तीखी बहस देखने को मिल सकती है।

संपादकीय

भारत पर 100 फीसदी टैरिफ!

राष्ट्रपति ट्रंप ने टैरिफ का खेल फिर शुरू कर दिया है। अमरीकी कांग्रेस (संसद) में एक बिल पेश किया गया है, जिसमें रूस से तेल खरीदने वाले पांच देशों-भारत, चीन, हंगरी, अजरबैजान, स्लोवाकिया-पर 100 फीसदी टैरिफ थोपने का प्रावधान है। संसद में रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स सांसद बिल पारित करने के पक्ष में हैं, क्योंकि वे रूस की अर्थव्यवस्था को अधिक कमजोर करना चाहते हैं। बिल के मसौदे में 500 फीसदी टैरिफ का प्रस्ताव था, जिसे घटा कर 100 फीसदी किया गया है। यदि अमरीकी संसद में यह बिल पारित किया जाता है, तो भारत पर 100 फीसदी टैरिफ के अलावा, 12.5 फीसदी बाल-मजदूरी का टैरिफ और 18 फीसदी सामान्य टैरिफ, कुल मिला कर 130.5 फीसदी टैरिफ लागू हो सकता है। अमरीका ने हमारे तांबा, इस्पात, एल्युमीनियम पर 50 फीसदी टैरिफ और सेमीकंडक्टर तथा ऑटो पार्ट्स पर 25-25 फीसदी टैरिफ थोप रखा है। यदि 100 फीसदी टैरिफ लागू हो गया, तो भारत अमरीका को जो सालाना 6.5 लाख करोड़ रुपए का निर्यात करता है, वह प्रभावित होगा। रूस से कच्चा तेल खरीद कर भारत सालाना 60,000 करोड़ रुपए की बचत करता है, लेकिन टैरिफ लागू होने से 10 गुना अधिक निर्यात पर पलीता लग सकता है। भारत के 2.1 लाख करोड़ रुपए के फार्मा, वस्त्र, हीरे के निर्यात पर भी असर पड़ेगा। आखिर अमरीका के साथ 'माई डियर फ्रेंड' वाली दोस्ती और रणनीतिक साझेदारी का सच यही है कि हम टैरिफ की मार लगातार झेलते रहें? राष्ट्रपति ट्रंप के आदेशानुसार ही तेल, गैस के आयात करें? यदि वह रूसी तेल की खरीद के लिए छूट दे, तो बल्लियां उछलते रहें और रूस से खुल कर खरीददारी करें? ट्रंप होते कौन हैं, क्या दुनिया भर के 'चौधरी' हैं, ठेकेदार हैं, जो भारत जैसे संप्रभु देश और दुनिया के सबसे बड़े बाजार को हांकते रहते हैं? हमारी सरकार और नेतृत्व गुमसुम क्यों रहते हैं? ब्राज़ील जैसे छोटे देश के राष्ट्रपति लूला डी सिल्व्वा अमरीका को ठ्का-सा जवाब दे सकते हैं, लेकिन दुनिया की सबसे अधिक आबादी का देश-भारत-अमरीकी राष्ट्रपति के फरमान सुनने और पालन करने को विवश है?

चितन-मनन

कर्म के पाप-पुण्य में फंस जाता है जीव

ईश्वर क्षेत्रज्ञ या चेतन है, जैसा कि जीव भी है, लेकिन जीव केवल अपने शरीर के प्रति सचेत रहता है, जबकि भगवान समस्त शरीरों के प्रति सचेत रहते हैं। चूंकि वे प्रत्येक जीव के हृदय में वास करने वाले हैं, अतएव वे जीवविशेष की मानसिक गतिशीलता से परिचित रहते हैं। परमात्मा प्रत्येक जीव के हृदय में ईश्वर या नियंता के रूप में वास कर रहे हैं और जैसा जीव चाहता है वैसा करने के लिए जीव को निर्देशित करते रहते हैं। जीव भूल जाता है कि उसे क्या करना है। पहले तो वह किसी एक विधि से कर्म करने का संकल्प करता है, लेकिन फिर वह अपने ही कर्म के पाप-पुण्य में फंस जाता है। वह एक शरीर को त्याग कर दूसरा शरीर ग्रहण करता है। चूंकि इस प्रकार वह आत्मा देहांतरण कर जाता है, अत उसे अपने विगत (पूर्वकृत) कर्मों का फल भोगना पड़ता है। ये कार्यकालप तभी बदल सकते हैं जब जीव सतोगुण में स्थित हो और यह समझे कि उसे कौन से कर्म करने चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो उसके विगत कर्मों के सारे फल बदल जाते हैं। इसीलिए हमने यह कहा है कि पांच तत्त्वों- ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल तथा कर्म में से चार शांत हैं, कर्म शांत नहीं है। परम चेतन ईश्वर जीव से इस मामले में समान हैं- भगवान तथा जीव दोनों की चेतनाएं दिव्य हैं। यह चेतना पदार्थ के संयोग से उत्पन्न नहीं होती है। ऐसा सोचना भ्रांतिमूलक है। किंतु भगवान की चेतना भौतिकता से प्रभावित नहीं होती है। भगवान कहते हैं- जब वे इस भौतिक वि में अवतरित होते हैं तो उनकी चेतना पर भौतिक प्रभाव नहीं पड़ता। यदि वे इस तरह प्रभावित होते तो दिव्य विषयों के संबंध में उस तरह बोलने के अधिकारी न होते जैसा कि वे भगवद्गीता में बोलते हैं। भौतिक कल्मष-ग्रस्त चेतना से मुक्त हुए बिना कोई दिव्य-जगत के विषय में कुछ नहीं कह सकता। अतः भगवान भौतिक दृष्टि से कलुषित (दूषित) नहीं हैं। भगवद्गीता तो शिक्षा देती है कि हमें इस कलुषित चेतना को शुद्ध करना है।



दिलीप कुमार पाटक

जब खेल खत्म होता है, तो राजा और प्यादा दोनों एक ही डिब्बे में बंद कर दिए जाते हैं। शतरंज की बिसात का यह सबसे सीधा नियम, असल में हमारी जिंदगी का भी सबसे बड़ा कड़वा सच है। आज दुनिया अंतर्राष्ट्रीय शतरंज दिवस मना रही है लेकिन यकीन मानिए, यह महज किसी एक खेल का जश्न नहीं है। यह तो इंसानी दिमाग के उस अनोखे जादू का सम्मान है, जो लकड़ी के चंद टुकड़ों और 64 खानों के भीतर पूरी कायनात के फैसले तय कर देता है। आज के इस दौर में, जब मोबाइल की रील्स और शॉर्ट्स ने हमारी गहराई से सोचने की आदत को लगभग खत्म कर दिया है, शतरंज की अहमियत पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। एक मजे की बात देखिए, जिस खेल को आज पूरी दुनिया कूटनीति और दिमाग की सबसे बड़ी कसौटी मानती है, उसकी असली जड़ें हमारे अपने हिंदुस्तान में हैं। सदियों पहले

हमारे पुरखे इसे चतुरंग कहते थे। भारत की मिट्टी से निकला यह खेल दुनिया भर का चक्कर लगाकर आज वापस अपने घर में एक नए अवतार में लौट आया है। आज जब हम इस खेल को देखते हैं, तो सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। भारतीय शतरंज इस समय अपने स्वर्णिम दौर में है। विश्वनाथन आनंद ने जिस सिलसिले को शुरू किया था, उसे आज डी. गुकेश, आर. प्रज्ञानंद और अर्जुन एन्रिगैसी जैसे युवाओं ने दुनिया के नक्शे पर चमका दिया है। इन लड़कों ने दुनिया के बड़े-बड़े बुध्दुधरों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है और यह साबित किया है कि भारत सिर्फ शतरंज की शुरूआत करने वाला देश नहीं है, बल्कि इसका बाँस भी है। पर क्या शतरंज को सिर्फ एक खेल के चरम से देखना सही होगा? बिल्कुल नहीं। अगर आप इसे थोड़ा ठहरकर समझेंगे, तो यह लाइफ मैनेजमेंट की सबसे बेहतरीन गाइड बुक है। यह खेल हमें सिखाता है कि आप जो भी कदम उठाते हैं, उसकी एक कीमत चुकानी पड़ती है। बिना सोचे-समझे चली गईं एक भी लापरवाही भरी चाल आपको बबादी की तरफ ले जा सकती है। यही बात हमारी रोजमर्रा की जिंदगी पर भी फिट बैठती है।

आज की हमारी नई पीढ़ी, जो हर चीज में तुरंत नतीजा चाहती है और बहुत जल्दी धैर्य खो देती है, उसके लिए शतरंज से बड़ा कोई गुरु नहीं हो सकता। यह खेल हमें ठंडे दिमाग से सोचना सिखाता है और यह भी बताता है कि कभी-कभी किसी बड़ी कामयाबी को पाने के

लिए अपने छोटे-छोटे स्वाधों या प्यादों की कुबानी भी देनी पड़ती है। सिर्फ जिंदगी ही क्यों, आज की ग्लोबल पॉलिटिक्स और अखबारों के पहले पन्ने की खबरों को समझने के लिए भी शतरंज की बिसात सबसे बढ़िया जरिया है। दुनिया के ताकतवर देशों के बीच जो इस वक्त खींचतान चल रही है, वो और कुछ नहीं बल्कि शह और मात का ही खेल है। वहां भी कमजोरों को मोहरा बनाकर आगे कर दिया जाता है और असली खिलाड़ी पीछे बैठकर रिमोट कंट्रोल चलाते हैं। जो नेता या देश दूर की चाल नहीं भांप पाता, वो इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए मात खा जाता है।

वैश्विक राजनीति की इस बिसात पर आज कोई भी देश पूरी तरह आजाद नहीं है। भारत भी इस समय एक ऐसी मुश्किल स्थिति में है, जहाँ उसे अपनी जरूरतों के लिए रूस से दोस्ती भी निभानी है और व्यापार के लिए अमेरिका के साथ भी तालमेल बिठाना है। दुनिया में जब भी कोई नया तनाव या युद्ध शुरू होता है, तो किसी एक बड़ी ताकत के पीछे आँख मूंदकर चलने के बजाय, अपने देश के फायदे को ध्यान में रखकर कदम उठाना ही असली कूटनीति है। तनाव के इस दौर के बीच, आज कंप्यूटर और एआई खेल के मैदान पर इंसानों से कहीं ज्यादा तेजी से चालें सोच लेते हैं।



लेकिन इसके बावजूद शतरंज का असली मानवीय रोमांच कभी कम नहीं हो सकता। कोई भी सॉफ्टवेयर उस इंसानी दिमाग की जगह नहीं ले सकता, जो हार के डर और भारी दबाव के बीच भी अपनी सूझबूझ से हारी हुई बाजी पलट देता है। इस अंतर्राष्ट्रीय शतरंज दिवस पर हमें अपनी नई पीढ़ी को इस खेल से जोड़ने की जरूरत है, ताकि बच्चे मोबाइल स्क्रीन की दुनिया से बाहर निकलकर असल जिंदगी की उलझनों को धैर्य से सुलझाना सीखें। आखिर जिंदगी भी तो चौंसठ खानों का एक खूबसूरत खेल है, जहाँ हमारा हर एक फैसला आगे का रास्ता तय करता है। (लेखक पत्रकार हैं)

विदेशी बाजारों में खारिज होते भारतीय उत्पाद!

लगभग 70 खेप भी लौटा चुका है। दूसरी ओर जापान ने भारतीय आमों के आयात पर रोक लगा दी क्योंकि निरीक्षण के दौरान प्यूमिगेशन प्रणाली में गंभीर कमियाँ मिलीं। इतना ही नहीं हांगकांग ने लोकप्रिय भारतीय मसालों में एंथलीन ऑक्साइड की मौजूदगी पर सवाल उठाए, जिसके बाद सिंगापुर सहित कई देशों ने भारतीय मसालों पर प्रतिबंध, रिकॉल अथवा जांच की प्रक्रिया शुरू कर दी। ये घटनाएं अलग-अलग नहीं बल्कि एक खतरनाक प्रवृत्ति का संकेत हैं। सबसे बड़ी चिंता यह है कि भारत की वैश्विक पहचान गुणवत्ता से नहीं, गुणवत्ता पर उठ रहे सवालों से बनने लगी है। दुनिया के सबसे बड़े कृषि उत्पादक देशों में शामिल होने के बावजूद वैश्विक कृषि व्यापार में भारत की हिस्सेदारी आज भी तीन प्रतिशत से कम है। वर्ष 2024-25 में कृषि निर्यात लगभग 51 अरब डॉलर तक जरूर पहुंचा, फिर भी हमारी क्षमता और संसाधनों की तुलना में यह बेहद सीमित है। ऐसे समय में, जब भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का प्रमुख केंद्र बनने का दावा कर रहा है, गुणवत्ता संबंधी ऐसी घटनाएं हमारे प्रयासों को ही कमजोर कर रही हैं। जापान का फैसला विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह दुनिया के सबसे सख्त और भरोसेमंद आयातक देशों में गिना जाता है। वर्ष 1986 में भी फ्रूट-प्लाई की आशंका के कारण उसने भारतीय आमों पर प्रतिबंध लगाया था। लगभग बीस वर्षों की मेहनत, बेहतर क्वांटिटी व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय मानकों के पालन के बाद 2006 में भारतीय आमों को फिर जापानी बाजार मिला। इस वर्ष निरीक्षण में दोबारा खामियां मिलने के बाद वही बाजार भारत के लिए बंद

हो गया। यह केवल एक व्यापारिक निर्णय नहीं, हमारी गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली पर अविश्वास का संकेत है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सबसे मूल्यवान चीज उत्पाद नहीं, भरोसा होता है। एक बार यदि कोई देश भारतीय उत्पादों पर संदेह करने लगे, तो उसका असर दूसरे बाजारों पर भी पड़ता है। जापान द्वारा गुणवत्ता पर सवाल उठाने के बाद यूरोपीय संघ, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश भी भारतीय कृषि उत्पादों की जांच और कड़ी कर देते हैं। परियामस्वरूप हमारे प्रतिस्पर्धी देश पाकिस्तान, वियतनाम, थाईलैंड और ताइवान उन बाजारों में तेजी से अपनी जगह बना लेते हैं। वैश्विक व्यापार में खोया हुआ बाजार वापस पाना वर्षों की मेहनत मांगता है। इसका सबसे बड़ा नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। महाराष्ट्र के अल्फांसो उत्पादक हों या गुजरात के केसर आम उगाने वाले किसान, वे पहले ही मौसम की मार झेल रहे हैं। ऐसे समय में निर्यात रुकने से प्रीमियम गुणवत्ता वाले उत्पाद घरेलू बाजार में आने-पाने दाम पर बिकते हैं और किसानों की आय पर सीधा प्रहार होता है। विडंबना यह है कि दुनिया का सबसे बड़ा आम उत्पादक देश होने के बावजूद भारत अपनी कुल आम उपज का लगभग एक प्रतिशत ही निर्यात कर पाता है। समस्या उत्पादन की नहीं, अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप परीक्षण, प्रसंस्करण, कोल्ड-चेन और गुणवत्ता नियंत्रण की है।

चिंता केवल कृषि उत्पादों तक सीमित नहीं है। नीति आयोग के हालिया आंकड़े बताते हैं कि जनवरी-मार्च 2026 की तिमाही में भारत का कुल व्यापार बढ़ा जरूर, जबकि वस्तुओं का निर्यात घटा और आयात

उससे कहीं अधिक तेजी से बढ़ा। व्यापार घाटे को सेवा क्षेत्र ने संभाल लिया। यदि विनिर्मित और कृषि उत्पाद भी वैश्विक बाजार में भरोसा खोने लगेंगे, तो तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य और कठिन हो जाएगा। सवाल यह है कि जिन खामियों का पता विदेशी प्रयोगशालाएं लगा रही हैं, वे भारत से उत्पाद भेजने से पहले हमारी जांच प्रणाली को क्यों नहीं दिखाई देती? यदि विदेशी एजेंसियां ही हमारे उत्पादों की गुणवत्ता का प्रमाणपत्र देंगी, तो मेड इन इंडिया की विश्वसनीयता कभी मजबूत नहीं हो सकेगी। सरकार ने जांच के निर्देश दिए, स्पाइस बोर्ड ने मानक कड़े किए और कुछ राज्यों ने कार्रवाई भी की। यह समस्या छिप्टुप कदमों से हल नहीं होगी। खेत से लेकर प्रयोगशाला, प्रसंस्करण केंद्र, पैकेजिंग और निर्यात तक पूरी व्यवस्था को ज़ीरो एरर की संस्कृति अपनानी होगी। भारत आज दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहा है। यह सपना केवल उत्पादन बढ़ाने से पूरा नहीं होगा। वैश्विक बाजार सस्ता माल नहीं, भरोसेमंद माल खरीदता है। अब समय आ गया है कि गुणवत्ता को औपचारिकता नहीं, राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया जाए। दुनिया में सबसे महंगा बिकने वाला उत्पाद मसाला, आम या चावल नहीं, विश्वसनीयता होती है। यदि हम उसे खो देंगे, तो विदेशी बाजार ही नहीं, भारत की आर्थिक मजबूतीकांक्षाएं भी धीरे-धीरे हमारे हाथों से फिसलती लौकिकाएं होंगी। (स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी) (यह लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)



जेके सीमेंट का शुद्ध लाभ पहली तिमाही में 15.3 घटकर 274.62 करोड़ नई दिल्ली ।

वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में जेके सीमेंट लिमिटेड का मुनाफा 15.3 प्रतिशत घटकर 274.62 करोड़ रुपए रहा। कंपनी ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि 2025-26 की समान तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 324.25 करोड़ रुपए था। जेके सीमेंट की परिचालन आय जून तिमाही में 20.25 प्रतिशत बढ़कर 4,031.72 करोड़ रुपए हो गई, जो 2025-26 की पहली तिमाही में 3,352.53 करोड़ रुपए थी। कंपनी का कुल खर्च आलोच्य तिमाही में 25.5 प्रतिशत बढ़कर 3,664.82 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी की कुल आय जून 2026 को समाप्त तिमाही में 19.41 प्रतिशत बढ़कर 4,070.97 करोड़ रुपए रही।

हुरुन की रियल एस्टेट सूची में आईएचसीएल, ओयो शीर्ष 10 में शामिल प्रिज्म (ओयो) का मूल्यांकन 107 फीसदी बढ़ा, इंडियन होटल्स भी शीर्ष पर नई दिल्ली ।

2026 की ग्रोहै-हुरुन इंडिया रियल एस्टेट-150 सूची में हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र ने अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। इस सूची में टाटा समूह की इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेड (आईएचसीएल) और ओयो की मूल कंपनी प्रिज्म शीर्ष-10 में जगह बनाने वाली आतिथ्य कंपनियां बनकर उभरी हैं। प्रिज्म ने अपने मूल्यांकन में जबरदस्त उछाल के साथ पहली बार इस प्रतिष्ठित सूची के शीर्ष-10 में प्रवेश किया है। रिपोर्ट के अनुसार रितेश अग्रवाल की अगुवाई वाली प्रिज्म (ओयो) आतिथ्य क्षेत्र की सबसे बड़ी सफलता की कहानी बनकर उभरी। इसका मूल्यांकन 107 प्रतिशत बढ़कर 67,200 करोड़ रुपये हुआ, जिससे यह छह पायदान ऊपर चढ़कर पांचवें स्थान पर पहुंची और पहली बार शीर्ष-10 में शामिल हुई। प्रिज्म अदानी ग्रॉपर्टीज के बाद देश की दूसरी सबसे मूल्यवान गैर-सूचीबद्ध रियल एस्टेट कंपनी भी रही। टाटा समूह की इंडियन होटल्स कंपनी का मूल्यांकन 93,300 करोड़ रुपये दर्ज किया गया, जबकि हाल ही में सूचीबद्ध हुई आईटीसी होटल्स ने 32,300 करोड़ रुपये के मूल्यांकन के साथ सूची में पहली बार जगह बनाई। एक दशक पहले सीमित योगदान देने वाला आतिथ्य क्षेत्र अब कंपनियों की संख्या के लिहाज से दूसरा सबसे बड़ा वर्ग है, सूची में कुल 24 कंपनियां शामिल हैं जिनका कुल मूल्यांकन 2.85 लाख करोड़ रुपये है। हुरुन इंडिया के अनुसार उपभोक्ता खर्च से जुड़े क्षेत्रों ने बेहतर प्रदर्शन किया, जबकि आवासीय और वाणिज्यिक रियल एस्टेट जैसे डेवलपर्स-निर्भर क्षेत्रों में गिरावट आई। कुल 151 कंपनियों में से केवल 31 के मूल्यांकन में वृद्धि हुई, जिसमें आतिथ्य और खुदरा क्षेत्र ही अग्रणी रहे।

केजी-डी6 गैस उत्पादन में बड़ी गिरावट, रिलायंस-बीपी को झटका भरपाई के लिए योजना तैयार कर रही कंपनी

नई दिल्ली । रिलायंस इंडस्ट्रीज और बीपी द्वारा संचालित कृष्णा-गोदावरी (केजी-डी6) ब्लॉक से प्राकृतिक गैस उत्पादन में चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में सालाना आधार पर करीब सात प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। इस अवधि में उत्पादन घटकर 2.48 करोड़ मानक घन मीटर प्रतिदिन (एमएमएससीएमडी) रह गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 2.66 करोड़ एमएमएससीएमडी था। कंपनी ने बताया कि यह गिरावट प्राकृतिक आधार पर जारी है, और पिछली जनवरी-मार्च तिमाही में उत्पादन 2.52 करोड़ एमएमएससीएमडी था। विश्लेषकों से बातचीत में कंपनी ने स्वीकार किया कि केजी-डी6 के दूसरे चरण की गैस परियोजनाओं का उत्पादन, जनवरी-मार्च 2024 में 3.06 करोड़ एमएमएससीएमडी के शीर्ष पर पहुंचा था, जिसके बाद से इसमें लगभग 1.9 प्रतिशत की

कमी आई है। रिलायंस ने तत्काल यह नहीं बताया कि उत्पादन में गिरावट कब तक जारी रहेगी। हालांकि, कंपनी के एक अधिकारी ने कहा कि इस गिरावट की भरपाई के लिए योजना तैयार की गई है, जिसकी जानकारी जल्द दी जाएगी। केजी-डी6 ब्लॉक में रिलायंस इंडस्ट्रीज की 66.67 प्रतिशत और बीपी की 33.33 प्रतिशत हिस्सेदारी है। पुराने डी-1 और डी-3 क्षेत्रों के बंद होने के बाद, रिलायंस और बीपी ने आर-क्लस्टर, सैटेलाइट क्लस्टर और एमजे जैसी गैस संपदा की गैस परियोजनाओं में लगभग 5 अरब डॉलर का निवेश कर उत्पादन शुरू किया था। अप्रैल-जून तिमाही में गैस से औसत प्राप्ति कीमत 8.89 प्रति इकाई (एमएमबीटीयू) रही, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 9.97 डॉलर से कम थी। वहीं, तेल/कंडन्सेट से औसत प्राप्ति कीमत बढ़कर 107.4 डॉलर प्रति बैरल हो गई, जो एक वर्ष पहले 69.9 प्रति बैरल थी।

सेबी ने फॉरेंसिक ऑडिट पैनल का विस्तार किया, वित्तीय निगरानी को मिलेगा बल

प्रमुख फर्मों समेत 18 कंपनियों को तीन साल के लिए पैनल में शामिल किया गया



नई दिल्ली । भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) ने सूचीबद्ध कंपनियों के वित्तीय विवरणों के फॉरेंसिक ऑडिट के लिए अपने विशेषज्ञ पैनल में 18 नई फर्मों को शामिल किया है। यह कदम वित्तीय पारदर्शिता को मजबूत करने और निवेशकों के हितों की बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित करने के नियामक के प्रयासों का हिस्सा है। इस विस्तार के साथ, सेबी की सूचीबद्ध कंपनियों की वित्तीय जांच की क्षमता और गहरी होगी। सेबी ने 15 जुलाई को जारी एक अधिसूचना में बताया कि इन फॉरेंसिक ऑडिटर्स का चयन एक निर्धारित सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया के तहत किया गया है। ये फर्म पहले से मौजूद ऑडिटर्स की सूची के अतिरिक्त होंगी, जिससे पैनल की समग्र क्षमता में वृद्धि होगी। नई सूची के प्रकाशन की

तारीख से ये कंपनियां अगले तीन साल तक सेबी के पैनल में अपनी सेवाएं देंगी। पैनल में शामिल प्रमुख फर्मों में अन्स्ट एंड यंग एलएलपी, केपीएमजी एशयोरेंस एंड कंसल्टिंग सर्विसेज एलएलपी, जेडएक्स ग्रांट थॉर्नटन भारत एलएलपी और नांगिया एंड कंपनी एलएलपी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त जे सी काबरा एंड एसोसिएट्स, जे मंडल एंड कंपनी एलएलपी, पिपारा एंड कंपनी एलएलपी, आर एस पटेल एंड कंपनी, सारथ एंड एसोसिएट्स, एएसए एंड एसोसिएट्स एलएलपी समेत कुल 18 विशेषज्ञ कंपनियों को इस पैनल में जगह मिली है। नांगिया एंड कंपनी एलएलपी के फॉरेंसिक सलाहकार विभाग के एक वरिष्ठ भागीदार ने इस कदम का स्वागत करते हुए कहा कि पैनल में शामिल होना इन कंपनियों की फॉरेंसिक विशेषज्ञता और वित्तीय पारदर्शिता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने जोर दिया कि यह मान्यता वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में उनके भरोसेमंद भागीदार के रूप में उनकी भूमिका को और मजबूत करेगी, जिससे निवेशक हितों की बेहतर सुरक्षा हो सकेगी।

शीर्ष 5 कंपनियों का मार्केट कैप 1.54 लाख करोड़ बढ़ा

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को सबसे अधिक फायदा हुआ



-मुंबई । बीते सप्ताह शेयर बाजार के सकारात्मक माहौल के बीच सेंसेक्स की शीर्ष 10 मूल्यवान कंपनियों में से पांच के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1.54 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इस दौरान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को सबसे अधिक फायदा हुआ, जबकि एचडीएफसी बैंक और भारती

एयरटेल जैसी कंपनियों को नुकसान उठाना पड़ा। समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 582.06 अंक और एनएसई निफ्टी 127.4 अंक के लाभ में रहा। इस सकारात्मक रुख का असर रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई), टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और बजाज फाइनेंस के बाजार मूल्यांकन पर पड़ा, जिससे उनकी हैसियत बढ़ गई। टीसीएस का

बाजार पूंजीकरण सर्वाधिक 72,072.3 करोड़ रुपये बढ़कर 8,20,672.70 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने हाल ही में, जून तिमाही में शुद्ध लाभ में 4.61 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 29,062.06 करोड़ रुपये बढ़ा, जबकि रिलायंस इंडस्ट्रीज ने अपने बाजार पूंजीकरण में 23,884.93 करोड़ रुपये का इजाफा किया। इसके अलावा, बजाज फाइनेंस की बाजार हैसियत 21,946.5 करोड़ रुपये और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का पूंजीकरण 7,338.34 करोड़ रुपये बढ़ा। हालांकि, यह सप्ताह सभी के लिए फायदेमंद नहीं रहा। एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी), लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) और हिंदुस्तान यूनिलीवर (एचयूएल)

जैसी पांच कंपनियों की बाजार हैसियत में गिरावट देखी गई। एलएंडटी का बाजार मूल्यांकन 18,097.72 करोड़ रुपये, एलआईसी का 12,080.75 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का 7,706.45 करोड़ रुपये घट गया। एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन भी 7,084.61 करोड़ रुपये कम हुआ, जबकि हिंदुस्तान यूनिलीवर के बाजार पूंजीकरण में 1,221.79 करोड़ रुपये की कमी आई। बाजार पूंजीकरण के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी रही, इसके बाद क्रमशः एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, बजाज फाइनेंस, एलआईसी, लार्सन एंड टुब्रो और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

तिमाही नतीजे, पश्चिम एशिया तनाव तय करेंगे शेयर बाजार की दिशा

निवेशकों की नजर मानसून, कच्चे तेल और वैश्विक घटनाक्रमों पर, कई दिग्गज कंपनियों के आएंगे नतीजे



मुंबई । भारतीय शेयर बाजार इस सप्ताह कई महत्वपूर्ण घटनाक्रमों के

कारण अत्यधिक उतार-चढ़ाव का सामना कर सकता है। विश्लेषकों का मानना है कि कंपनियों के पहली तिमाही के नतीजे, पश्चिम

एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों की दिशा दलाल स्ट्रीट की चाल को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसके अलावा, दक्षिण-पश्चिम मानसून की प्रगति और विदेशी निवेशकों की गतिविधियां भी बाजार के लिए प्रमुख संकेतक रहेंगी। बाजार के जानकारों के अनुसार इस सप्ताह घरेलू कंपनियों के तिमाही परिणाम और वृहद आर्थिक आंकड़े बाजार की दिशा तय करने में अहम

भूमिका निभाएंगे। उन्होंने बताया कि मानसून की प्रगति और खरीफ फसलों की बुवाई की स्थिति पर निवेशकों की गहरी नजर रहेगी, क्योंकि इनका सीधा असर ग्रामीण मांग, खाद्य महंगाई और भारतीय रिजर्व बैंक की भविष्य की मौद्रिक नीतियों पर पड़ सकता है। वैश्विक स्तर पर पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव और उसके कारण कच्चे तेल की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव पर निवेशक करीबी नजर रखेंगे।

यश बैंक के मुनाफे में 33.7 फीसदी उछाल, 1,071 करोड़ के पार

मुंबई निजी क्षेत्र के प्रमुख बैंक यश बैंक ने मौजूदा कारोबारी साल की पहली तिमाही के शानदार नतीजे जारी किए हैं। जून 2026 को खत्म हुई इस तिमाही में बैंक का स्टैंडअलोन नेट प्रॉफिट सालाना आधार पर 33.7 प्रतिशत उछलकर 1,070.99 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। पिछले साल इसी तिमाही में बैंक को 801 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। बैंक की ब्याज से होने वाली कमाई में

भी अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। यश बैंक का नेट इंटरेस्ट इनकम 17.5 फीसदी बढ़कर 2,786.46 करोड़ रुपये रहा, जो बीते साल की समान तिमाही में 2,371 करोड़ रुपये था। इसके साथ ही बैंक का नेट इंटरेस्ट मार्जिन भी 2.5 प्रतिशत से सुधरकर 2.7 प्रतिशत पर आ गया है। डिपॉजिट की लागत में कमी और पीएसएल शॉर्टफॉल डिपॉजिट के बैलेंस में गिरावट आने से बैंक के मार्जिन को मजबूत सहारा मिला है। यश बैंक के लिए सबसे बड़ी राहत की

बात यह रही कि इसके फंसे हुए कर्ज में कमी आई है, जिससे एसेट क्वालिटी काफी बेहतर हुई है। बैंक का ग्रांस एनपीए रेशियो पिछले साल के 1.6 फीसदी से घटकर अब 1.3 फीसदी रह गया है। वहीं, नेट एनपीए रेशियो भी 0.3 फीसदी से कम होकर 0.2 फीसदी पर आ गया है।

अगर बैंक के कामकाज से होने वाले मुनाफे (ऑपरेटिंग प्रॉफिट) की बात करें, तो इसमें सालाना आधार पर 25.5 प्रतिशत की तेजी आई है और यह 1,704

करोड़ रुपये रहा। इसके अलावा बैंक की नॉन-इंटरेस्ट इनकम मामूली रूप से 2.6 फीसदी बढ़कर 1,798 करोड़ रुपये दर्ज की गई।

शुक्रवार को बाजार बंद होने पर यश बैंक के शेयर 0.59 फीसदी की गिरावट के साथ 23.61 रुपये पर थे। हालांकि, साल 2026 में अब तक इस स्टॉक ने निफ्टी 50 के मुकाबले काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। जहां इस साल निफ्टी 50 में 6.9 फीसदी की गिरावट आई है।

त्योहारों की दस्तक, मंडियों में सन्नाटा, तेल-तिलहन बाजार में जोरदार उछाल

किसान नहीं बेच रहे सस्ते में, घट गई सोयाबीन-सरसों की आवक



नई दिल्ली । आगामी त्योहारों की बढ़ती मांग और मंडियों में किसानों की कम आवक के चलते देश के तेल-तिलहन बाजारों में जोरदार तेजी दर्ज की गई। बीते सप्ताह सरसों, मूंगफली, सोयाबीन तेल-तिलहन समेत कच्चा पामतेल (सीपीओ) और बिनोला तेल के दाम में मजबूती देखी गई। बाजार विश्लेषकों के अनुसार किसानों को सोयाबीन जैसी फसलों के पहले ही बेहतर दाम मिल चुके हैं, जिसके चलते वे अब कम कीमत पर बिजनी से कतरा रहे हैं। मंडियों में आवक बेहद कम बनी हुई है, खासकर सोयाबीन की आवक दैनिक खपत

बिक रहा है। महाराष्ट्र के लालूर में सोयाबीन प्लांटों ने किसानों को आकर्षित करने के लिए भविष्य के खरीद भाव 7,700 से बढ़ाकर 8,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिए हैं। वहीं, नागण्य उपलब्धता के कारण देश की लगभग 97व बिनौला पेराई मिलें बंद हो चुकी हैं, जिससे बिनौला तेल में भी तेजी है। आयातित खाद्य तेलों में पहले हो रहे घाटे में भी कुछ कमी आई है। सूत्रों ने बताया कि बीते सप्ताह सरसों दाना 350 रुपये के सुधार के साथ 8,075-8,100 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों तेल 650 रुपये के सुधार के साथ 16,550 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल क्रमशः 90-90 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 2,705-2,805 रुपये और 2,705-2,855 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाना और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमशः 375-375 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 7,550-7,600 रुपये और 7,400-

7,475 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

इसी प्रकार दिल्ली में सोयाबीन तेल 275 रुपये के सुधार के साथ 15,825 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन इंदौर तेल 375 रुपये के सुधार के साथ 15,675 रुपये और सोयाबीन डीगम तेल 300 रुपये के सुधार के साथ 12,350 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।औद्योगिक मांग बढ़ने के बीच बीते सप्ताह मूंगफली तिलहन का दाम 400 रुपये के सुधार के साथ 7,350-7,925 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 1,000 रुपये के सुधार के साथ 17,000 रुपये प्रति क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाईंड तेल 105 रुपये के सुधार के साथ 2,665-2,965 रुपये प्रति टिन पर बंद हुआ।लागत से नीचे दाम पर बिकवाली का अंतर पहले के मुकाबले घटने के कारण समीक्षाधीन सप्ताह में सीपीओ तेल का दाम 225 रुपये के सुधार के साथ 13,850 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

डाउनस्ट्रीम' एल्युमीनियम उद्योगों की सीमा शुल्क घटाने की मांग कच्चे एल्युमीनियम व कबाड़ पर उच्च आयात शुल्क से बढ़ रही लागत, केंद्र को सौंपा ज़ापन नई दिल्ली ।

एल्युमीनियम से तैयार उत्पाद बनाने वाले उद्योगों (डाउनस्ट्रीम) ने केंद्र सरकार से प्राथमिक एल्युमीनियम और एल्युमीनियम कबाड़ (स्क्रैप) पर सीमा शुल्क कम करने की मांग की है। उनका कहना है कि मौजूदा उच्च शुल्क व्यवस्था के कारण सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) पर लागत का भारी दबाव है, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धा क्षमता प्रभावित हो रही है। एल्युमीनियम सेकेंडरी मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन सहित प्रमुख उद्योग संगठनों ने हाल ही में खान मंत्रालय को सीपे संयुक्त ज्ञापन में कहा है कि प्राथमिक एल्युमीनियम पर 8.25 फीसदी और कबाड़ पर 2.75 फीसदी का प्रभावी आयात शुल्क घरेलू उत्पादकों को आयात-समता के आधार पर कीमतें तय करने का मौका देता है, जिससे डाउनस्ट्रीम उद्योगों की लागत बढ़ती है। भारत की प्रति व्यक्ति एल्युमीनियम खपत वैश्विक औसत (11 किग्रा) से काफी कम (2.5 किग्रा) है, जिसकी मुख्य वजह लागत है। संगठनों का दावा है कि पिछले कुछ वर्षों में एमएसएमई के लाभ मार्जिन में 70 फीसदी तक की गिरावट आई है, वहीं हाल के तीन महीनों में वैश्विक कीमतों, मालदुलाई और ऊर्जा लागत बढ़ने से कच्चे माल की लागत 20-35 फीसदी बढ़ी है। उन्होंने उलट शुल्क ढांचे पर भी चिंता जताई है, जहां तैयार एल्युमीनियम उत्पाद मुक्त व्यापार समझौतों के तहत कम शुल्क पर आयात होते हैं, जबकि कच्चे माल पर अधिक शुल्क लगता है। यूरोपीय संघ के कार्बन सीमा समायोजन तंत्र से भारतीय निर्यातकों की प्रतिस्पर्धा क्षमता और प्रभावित होने का खतरा है। उद्योग का मानना है कि शुल्क घटाने से लागत कम होगी, उत्पादन बढ़ेगा और मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा। हालांकि, प्राथमिक एल्युमीनियम उत्पादक इस कदम का विरोध कर सकते हैं, क्योंकि मौजूदा व्यवस्था उन्हें बेहतर कीमतें दिलाने में सहायक है।

जेके सीमेंट का शुद्ध लाभ पहली तिमाही में 15.3त घटकर 274.62 करोड़ नई दिल्ली ।

वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में जेके सीमेंट लिमिटेड का मुनाफा 15.3 प्रतिशत घटकर 274.62 करोड़ रुपए रहा। कंपनी ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि 2025-26 की समान तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 324.25 करोड़ रुपए था। जेके सीमेंट की

परिचालन आय जून तिमाही में 20.25 प्रतिशत बढ़कर 4,031.72 करोड़ रुपए हो गई, जो 2025-26 की पहली तिमाही में 3,352.53 करोड़ रुपए थी। कंपनी का कुल खर्च आलोच्य तिमाही में 25.5 प्रतिशत बढ़कर 3,664.82 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी की कुल आय जून 2026 को समाप्त तिमाही में 19.41 प्रतिशत बढ़कर 4,070.97 करोड़ रुपए रही।

पीएनबी के मुनाफे में तीन गुना से ज्यादा का बंपर उछाल मुंबई ।

सरकारी बैंक पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने अप्रैल-जून 2026 तिमाही के नतीजे जारी कर दिए हैं। इस दौरान बैंक का मुनाफा बढ़कर 5,253 करोड़ रुपये पहुंच गया। पिछले साल इसी तिमाही में बैंक का मुनाफा 1,675 करोड़ रुपये था। यानी इस बार बैंक ने तीन गुना से ज्यादा मुनाफा कमाया है। बैंक ने शेयर बाजार को दी गई जानकारी में बताया कि जून तिमाही में उसकी कुल आय 37,231 करोड़ रुपये रही, जो पिछले साल के मुकाबले लगभग बराबर रही। हालांकि, ब्याज से होने वाली कमाई बढ़कर 32,897 करोड़ रुपये हो गई। एक साल पहले यह 31,964 करोड़ रुपये थी। जून तिमाही में बैंक का ऑपरेटिंग प्रॉफिट भी बढ़ा है। यह 7,519 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 7,081

करोड़ रुपये था। बैंक के खराब कर्ज में भी सुधार देखने को मिला। जून 2026 के अंत तक यह घटकर 2.78 फीसदी रह गया, जबकि एक साल पहले यह 3.78 फीसदी था। रकम के हिसाब से जीएनपीए 42,673 करोड़ रुपये से घटकर 35,381 करोड़ रुपये रह गया। यानी इसमें 7,292 करोड़ रुपये की कमी आई। वहीं, नेट एनपीए भी 0.38 फीसदी से घटकर 0.26 फीसदी पर आ गया। इसकी कुल राशि 4,132 करोड़ रुपये से घटकर 3,433 करोड़ रुपये रह गई, यानी 699 करोड़ रुपये की कमी दर्ज की गई। हालांकि, बैंक ने खराब कर्ज के लिए इस तिमाही में 792 करोड़ रुपये का रखा है, जो पिछले साल की समान तिमाही के 396 करोड़ रुपये से दोगुना है। वहीं, बैंक का कैपिटल एडिज्केसी रेशियो भी बढ़कर 18.13 फीसदी हो गया, जो पिछले साल जून के अंत में 17.5 फीसदी था।

पटेल इंजीनियरिंग ने मप्र में 12 किमी सिंचाई सुरंग परियोजना का अहम चरण पूरा किया

1600 करोड़ की इस परियोजना से 2.45 लाख हेक्टेयर को मिलेगा पानी



मुंबई । शेयर बाजार में लिस्टेड पेनी कैटेगरी के स्टॉक पटेल इंजीनियरिंग के शेयर सोमवार को फोकस में रहेंगे। कंपनी ने हाल ही में एक अहम घोषणा की, जिसमें बताया गया कि उसने मध्य प्रदेश में बन रही 12 किलोमीटर लंबी, भारत की सबसे लंबी सिंचाई सुरंग परियोजना में बड़ी सफलता हासिल कर ली है। यह 1,600 करोड़ रुपए की लागत वाली परियोजना है, जिसके पूरा होने से राज्य में कृषि और जल आपूर्ति को नया जीवन मिलेगा। पटेल इंजीनियरिंग ने जानकारी दी कि मध्य प्रदेश में स्लीमानाबाद कैरियर नहर परियोजना के तहत बन रही 12 किलोमीटर लंबी सिंचाई सुरंग का कार्य पूरा हो गया है। यह नहर परियोजना पूरी होने के बाद मध्य प्रदेश में लगभग 2,45,000 हेक्टेयर क्षेत्र की

सिंचाई क्षमता को बढ़ाएगी। इसके साथ ही, यह जबलपुर और कटनी को प्रतिदिन 28.4 करोड़ लीटर घरेलू और औद्योगिक पानी की भी आपूर्ति करेगी। स्लीमानाबाद कैरियर नहर, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण द्वारा विकसित की जा रही बरगी डायवर्जन परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पटेल इंजीनियरिंग का शेयर बीते शुक्रवार को बीएसई पर 29.60 पर बंद हुआ, जिसमें 2.28 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। शेयर का 52-सप्ताह का उच्चतम स्तर 40.57 रुपए और न्यूनतम स्तर 22.08 रुपए है। वित्तीय मोर्चे पर कंपनी ने हाल ही में समाप्त हुई मार्च तिमाही में शानदार प्रदर्शन किया। इस दिमाही में कंपनी का मुनाफा दोगुने से अधिक होकर 71.49 करोड़ रुपए हो गया, जो पिछले साल की समान तिमाही में 32.80 करोड़ रुपए था।

30 की हुई
स्मृति मंथाना

बल्ले से लिख रही हैं भारतीय महिला क्रिकेट की नई कहानी



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार सलामी बल्लेबाज स्मृति मंथाना आज 30 साल की हो गई हैं। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी, शानदार रिकॉर्ड और लगातार बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट को नई पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है।

भारतीय महिला क्रिकेट की लोकप्रियता पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ी है। आज महिला टीम के मुकाबलों में स्टेडियम दर्शकों से भरने लगे हैं और टीवी व डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी बड़ी संख्या में लोग मैच देखते हैं। इस बदलाव के पीछे जिन

खिलाड़ियों का सबसे बड़ा योगदान माना जाता है, उनमें भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान और स्टार सलामी बल्लेबाज स्मृति मंथाना का नाम सबसे आगे आता है। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी, शानदार तकनीक और निरंतर प्रदर्शन के दम पर स्मृति मंथाना ने न केवल भारतीय टीम को कई यादगार जीत दिलाई हैं, बल्कि महिला क्रिकेट को नई पहचान भी दिलाई है। लोकप्रियता के मामले में वह देश के कई पुरुष क्रिकेटर्स को भी कड़ी टक्कर देती हैं। मैदान पर अक्सर फैंस के बीच 'मंथाना... मैदान पर अक्सर फैंस के बीच 'मंथाना...' के नारे उनकी बढ़ती लोकप्रियता की गवाही देते हैं।

बचपन से ही क्रिकेट से जुड़ाव स्मृति मंथाना का जन्म 18 जुलाई 1992 को मुंबई में हुआ था। उनका परिवार पहले से ही क्रिकेट से जुड़ा रहा है। उनके पिता और भाई दोनों क्रिकेट खेल चुके हैं। इसी माहौल ने स्मृति को भी क्रिकेट की ओर प्रेरित किया। एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि उनके पिता को बाएं हाथ के बल्लेबाज बेहद पसंद थे, इसलिए उन्होंने भी बाएं हाथ से बल्लेबाजी करना शुरू किया। महज नौ साल की उम्र में उन्हें महाराष्ट्र की अंडर-15 टीम में जगह मिल गई थी, जबकि 11 साल की उम्र में वह राज्य की अंडर-19 टीम का हिस्सा बन गईं।

तीनों फॉर्मेट में शानदार रिकॉर्ड

करीब 13 साल के अंतरराष्ट्रीय करियर में स्मृति मंथाना ने तीनों फॉर्मेट में शानदार प्रदर्शन किया है।

टेस्ट: 9 मैच, 788 रन, 2 शतक, 5 अर्धशतक
वनडे: 120 मैच, 5,411 रन, 14 शतक, 35 अर्धशतक

टी20 अंतरराष्ट्रीय: 171 मैच, 4,538 रन, 1 शतक, 35 अर्धशतक

उनकी आक्रामक बल्लेबाजी भारतीय टीम को कई महत्वपूर्ण मुकाबलों में जीत दिला चुकी है।

फाइनल में
यामागुची
को हराया

पीवी सिंधु ने जापान ओपन जीतकर रचा इतिहास

जीतने वाली पहली भारतीय बनी



टोक्यो (एजेंसी)। भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु ने जापान ओपन सुपर-750 बैडमिंटन टूर्नामेंट जीत लिया है। वे यह टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय बनी हैं। 31 साल की सिंधु ने रविवार को खेले गए

फाइनल मुकाबले में जापान की अकाने यामागुची को 21-17, 21-17 से हराया। यह मैच 50 मिनट तक चला।

सिंधु 4 साल बाद यामागुची को किसी फुल मैच में हरा सकी हैं। उन्हें

पिछली जीत थाईलैंड ओपन में 2022 में मिली थी। पिछले साल मलेशिया ओपन में यामागुची रिटायर हर्ट हो गई थीं।

एस. जयशंकर ने भी दी शुभकामनाएं विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी सिंधु को बधाई देते हुए लिखा, पीवी सिंधु को 2026 जापान ओपन महिला एकल खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बनने पर हार्दिक बधाई। हमें आप पर गर्व है।

2019 के बाद पहला बड़ा खिताब जीतीं

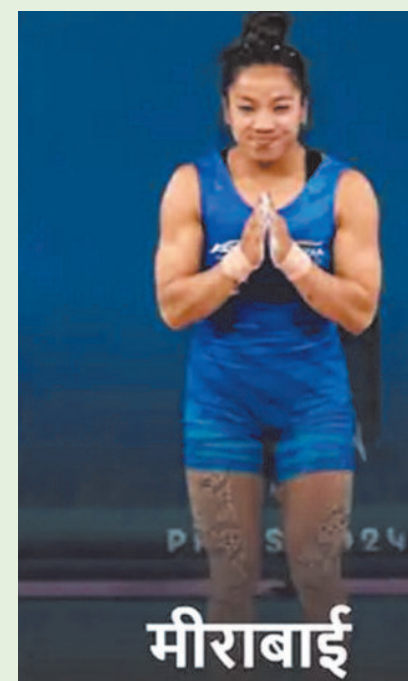
सिंधु ने 2 साल बाद कोई खिताब जीता है। उन्होंने 2024 में सेयद मोदी इंटरनेशनल जीता था। वे 2022 में सिंगापुर ओपन सुपर 500 में चैंपियन बनी थीं। यह सिंधु के करियर का पहला सुपर-750 खिताब है। 2019 वर्ल्ड चैंपियनशिप जीतने के बाद यह उनका सबसे बड़ा इंटरनेशनल खिताब है।

सेमीफाइनल में चैन यू फेई चोटिल होकर बाहर हुईं- सेमीफाइनल में चीन की चैन यू फेई हेमिस्ट्रग चोट के कारण रिटायर्ड हो गईं। उस समय सिंधु 21-19, 15-10 से आगे थीं। इससे पहले सिंधु ने जापान की पूर्व वर्ल्ड चैंपियन नोजोमी ओकुहारा चोट के कारण नहीं उतरीं, जिससे सिंधु को वॉकआवर मिला। इससे पहले दूसरे दौर में सिंधु ने चीन की हान यू को 35 मिनट में 21-16, 21-14 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

पीवी सिंधु की ऐतिहासिक जीत पर पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है: राजनाथ सिंह

भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी और दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु ने जापान ओपन 2026 का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने उन्हें बधाई देते हुए देश का गौरव बताया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिंधु की तस्वीर साझा करते हुए लिखा, पीवी सिंधु को जापान ओपन 2026 महिला एकल खिताब जीतने पर हार्दिक बधाई।

कॉमनवेल्थ गेम्स में चानू और लवलीना होंगी भारत की ध्वजवाहक



मीराबाई



लवलीना

2022 में सिंधु और मनप्रीत ध्वजवाहक थे। बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 के उद्घाटन समारोह में भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु और पुरुष हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह भारतीय दल के ध्वजवाहक थे।

वही समापन समारोह में विश्व चैंपियन मुकेशबाज निखत जरीन और टेबल टेनिस के दिग्गज शरत कमल ने तिरंगा धामक भारतीय दल की अगुआई की।

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक मेडलिस्ट मीराबाई चानू और लवलीना बोरगोहेन ग्लासगो में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स के उद्घाटन समारोह में भारत की ध्वजवाहक होंगी। भारतीय ओलंपिक संघ ने शनिवार को इसकी घोषणा की। इस मल्टी-स्पोर्ट इवेंट का उद्घाटन समारोह 23 जुलाई को आयोजित किया जाएगा। आईओए अध्यक्ष पीटी उपा ने कहा कि दोनों खिलाड़ियों का यह सम्मान मिलना गर्व की बात है। फिलहाल दोनों खिलाड़ी यूनाइटेड किंगडम में ट्रेनिंग कर रही हैं। चानू ने टोक्यो ओलंपिक में सिल्वर जीता था मीराबाई चानू 8 अगस्त को 32 साल की हो जाएंगी। वे करीब एक दशक से भारत की प्रमुख वेतलिफ्टर हैं। उन्होंने 2021 टोक्यो ओलंपिक में सिल्वर और 2022 बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड मेडल जीता था। हालांकि वे 2024 पेरिस ओलंपिक में पदक नहीं जीत सकीं, लेकिन ग्लासगो में वे भारत की बड़ी उम्मीद हैं। लवलीना ने टोक्यो में ब्रॉन्ज जीता था।



इंग्लैंड ने फुटबॉल वर्ल्ड कप में ब्रॉन्ज जीता

को पीछे छोड़ दिया। उनके 10 गोल हो गए हैं, जबकि मेसी के 8 गोल हैं।

इतना ही नहीं, एमबाप्पे वर्ल्ड कप इतिहास में सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बने। उनके नाम अब 22 विश्व कप गोल हो गए हैं, जबकि लियोनेल मेसी के 21 गोल हैं। हालांकि, आज देर रात होने वाले वर्ल्ड कप फाइनल में मेसी के पास वापसी करने का मौका है।

वर्ल्ड कप के तीसरे स्थान के मैच में पहली बार कुल 10 गोल देखने को मिले। यह वर्ल्ड कप 1982 के बाद सबसे ज्यादा गोल वाला मुकाबला रहा। डेक्लान राइस ने इंग्लैंड के लिए फुटबॉल वर्ल्ड कप इतिहास का दूसरा सबसे तेज (2 मिनट 14 सेकंड) गोल किया।

मियामी गार्डन्स (एजेंसी)। इंग्लैंड ने फुटबॉल वर्ल्ड कप 2026 के तीसरे स्थान के मैच में फ्रांस को 6-4 से हराकर ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। इंग्लैंड ने वर्ल्ड कप इतिहास में अपना दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। टीम 1966 में चैंपियन बनी थी।

इंग्लैंड की जीत के हीरो बुकायो साका रहे, जिन्होंने हैट्रिक लगाई। वहीं, फ्रांस के कप्तान किलियन एम्बाप्पे ने दो गोल करके गोल्डन बूट की रेस में मेसी

साका की हैट्रिक, फ्रांस हारा, एम्बाप्पे गोल्डन बूट की रेस में मेसी से आगे, टूर्नामेंट में 10 गोल



रोहित-विराट टीम में परमानेंट नहीं, प्रदर्शन के दम पर ही मिलनी चाहिए जगह

कपिल
देव बोले-

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1983 वर्ल्ड कप विजेता कप्तान कपिल देव ने कहा कि टीम इंडिया में किसी भी खिलाड़ी की जगह पक्की नहीं होती। उन्होंने कहा कि रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे सीनियर खिलाड़ियों को भी जब तक प्रदर्शन कर रहे हैं, तब तक खेलना चाहिए। साथ ही टीम मैनेजमेंट को भविष्य के लिए नए खिलाड़ियों को भी तैयार रखना चाहिए।

कपिल देव ने कहा कि इंटरनेशनल क्रिकेट में टीम में बने रहने का



एकमात्र पैमाना प्रदर्शन है। उन्होंने रोहित और विराट के अनुभव की तारीफ करते हुए कहा



कि जब तक वे टीम के पास मजबूत बैकअप तैयार होना चाहिए रोहित शर्मा और विराट कोहली 2024 टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद टी-20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं। फिलहाल दोनों वनडे और टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए खेल रहे हैं।

संन्यास की अफवाहों के बीच बेफिक्र दिखे रोहित

● लॉर्ड्स की बॉलकनी में गंभीर के साथ हंसी-मजाक करते आए नजर

गौतम गंभीर के साथ हंसी-मजाक का वीडियो वायरल

लॉर्ड्स में अभ्यास सत्र से पहले भारतीय टीम के खिलाड़ी और सपोर्ट स्टाफ बालकनी में मौजूद थे। इसी दौरान मुख्य कोच गौतम गंभीर ने कुछ मजाकिया इशारे किए, जिन्हें देखकर रोहित शर्मा अपनी हंसी नहीं रोक पाए। उनके साथ मौजूद सपोर्ट स्टाफ के सदस्य भी ठहाके लगाते नजर आए। यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और फैंस इसे काफी पसंद कर रहे हैं।



संन्यास की अफवाहों ने पकड़ा था जोर

दूसरे वनडे के दौरान सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें सामने आई थीं कि लॉर्ड्स में खेला जाने वाला तीसरा वनडे रोहित शर्मा के करियर का आखिरी वनडे हो सकता है। हालांकि, इन अटकलों पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव देवजीत सैकिया ने विराम लगा दिया। सैकिया ने स्पष्ट किया कि रोहित शर्मा के संन्यास को लेकर चल रही खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। उन्होंने कहा कि जब तक चयनकर्ताओं की योजनाओं में रोहित शामिल हैं, तब तक वह भारतीय टीम के लिए

लंदन (एजेंसी)। संन्यास की अटकलों के बीच रोहित शर्मा के लॉर्ड्स से दो वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं। एक वीडियो में वह गौतम गंभीर के साथ हंसी-मजाक करते दिखे, जबकि दूसरे में उन्होंने कहा, 'बाहर ब्या चल रहा है, उससे हमको क्या', जिससे उन्होंने बाहरी चर्चाओं को तबज्जो न देने का संदेश दिया। भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्ड्स में खेले जाने वाले तीसरे और निर्णायक वनडे से पहले टीम इंडिया के अनुभवी बल्लेबाज रोहित शर्मा एक बार फिर चर्चा का केंद्र बन गए हैं। एक ओर उनके वनडे भविष्य को लेकर संन्यास की अटकलें तेज हैं,

तो दूसरी ओर सोशल मीडिया पर उनके दो वीडियो तेजी से वायरल हो रहे हैं। पहले वीडियो में रोहित शर्मा टीम इंडिया के मुख्य कोच गौतम गंभीर के साथ हंसी-मजाक करते नजर आ रहे हैं, जबकि दूसरे वीडियो में उन्होंने अपने अंदाज में साफ कर दिया कि बाहरी चर्चाओं से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।

चयनकर्ताओं के बीच हुई थी चर्चा-रिपोर्ट्स के मुताबिक, रोहित शर्मा को भविष्य को लेकर चयनकर्ताओं के बीच चर्चा जरूर हुई थी और टीम इंडिया के मुख्य कोच गौतम गंभीर को भी इस पूरी प्रक्रिया की जानकारी थी।

भारत और इंग्लैंड तीसरे वनडे में काली पट्टी बांधकर उतरे खिलाड़ी



महान क्रिकेटर सोबर्स को दी श्रद्धांजलि

एक सोबर्स ने शुक्रवार को आखिरी सांस ली। वे अपने 90वें जन्मदिन से 11 दिन दूर थे। भारतीय टीम मैनेजमेंट ने एक पोस्ट में कहा, %टीम इंडिया वेस्टइंडीज के दिग्गज सर गारफील्ड सोबर्स को श्रद्धांजलि देने के लिए काली पट्टी बांध रही है, जिनका शुक्रवार को निधन हो गया। यहां भारत और इंग्लैंड के बीच सीरीज का फैसला करने वाले तीसरे वनडे मैच की शुरुआत से पहले क्रिकेट के मक्का (लॉर्ड्स) में एक मिनट का मौन रखा गया। भीड़ और खिलाड़ियों ने एक साथ खड़े होकर सोबर्स को श्रद्धांजलि दी। भारत के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने खेल की शुरुआत के लिए घंटी बजाई। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया। इंग्लैंड के कप्तान हैरी ब्रुक ने टॉस जीतने के बाद कहा, आज हम पहले बैटिंग करेंगे। पिच अच्छी लग रही है। साकिब महमूद की जगह टंग टीम में वापस आ रहे हैं। स्ट ने जिस तरह से बैटिंग की, उससे एक बहिशा मिसाल कायम हुई है। उम्मीद है कि हम हालात को जल्दी समझ लेंगे। भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने टॉस के बाद कहा, हम बॉलिंग करते।



फिल्म 'रूपा' से कमबैक करेंगे गोविंदा, शेयर किया लकी नंबर का दिलचस्प किस्सा

1990 के दशक में अपनी शानदार कॉमिक टाइमिंग, दमदार डांस और अभिनय के लिए पहचाने जाने वाले एक्टर गोविंदा लंबे समय से फिल्मों से दूर थे। वह अब फिल्म 'रूपा' के जरिए वापसी करने के लिए तैयार हैं। अभिनेता ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि शायद उनकी किस्मत में यही लिखा था कि फिल्म इंडस्ट्री ने उन्हें नजरअंदाज कर दिया, ताकि वह पहले से ज्यादा मजबूती के साथ वापसी कर सकें। उन्होंने कहा कि शायद मेरी किस्मत में कई बार लोगों द्वारा नकारा जाना ही लिखा था। लोगों ने कहा कि अब यह फिल्मों में नजर नहीं आएगा, लेकिन मैं हर बार फिर से शुरुआत करता हूँ। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो मैंने सोचा है और जिसकी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते, वह इस फिल्म के जरिए सच हो जाए। यह फिल्म खास तौर पर युवाओं के लिए है। जब वे इसे सिनेमाघरों में देखेंगे, तो उनके सपनों को नई उड़ान मिलेगी। यह सब संभव है। मैं इस पर आध्यात्मिक बातें नहीं करना चाहता। एक्टर गोविंदा ने यह भी बताया कि वह अंक ज्योतिष (न्यूमरोलॉजी) में बहुत यकीन रखते हैं। 14 नंबर मेरा लकी नंबर है। मेरा नाम भी अंक ज्योतिष के हिसाब से ही रखा गया है। मैंने बहुत कम उम्र में ही इसमें यकीन करना शुरू कर दिया था। मैं 14 साल का था। मुझ पर भगवान की कृपा थी। मैंने एक हफ्ते में 14 फिल्में साइन की थीं। फिर मैंने 14 साल तक सुपर-स्टारडम देखा। फिर मैं 14वीं लोकसभा में सांसद बना। मैंने 14 साल तक संघर्ष किया और फिर मैं फिल्मों में वापस आया। यह पहली बार है जब मैं 5 साल से ज्यादा इंतजार नहीं कर सका। मैं फिर से शुरुआत करूंगा और अब मुझे उम्मीद है कि सफर यहीं से शुरू हुआ है। गोविंदा ने कहा कि जब मैं गांव में कहता था कि मैं हीरो बूना, तो लोग मुझ पर हंसते थे। वे कहते थे, 'तुम न तो सिगरेट पीते हो, न शराब पीते हो, न नॉन-वेज खाते हो, न लहसुन-प्याज खाते हो। तुम हीरो कैसे बन सकते हो। गोविंदा ने कहा कि लोग कहते थे कि अगर तुम डर के मारे भागोगे, तो साधु बन जाओगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैंने वही किया जो मेरी मां ने सोचा था। अब मुझे लगता है कि यह फिल्म बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। ऐसी फिल्में बननी चाहिए। और बच्चों को आगे बढ़ना चाहिए।



हॉलीवुड फिल्म 'हॉलीगार्ड्स सागा- द पोर्टल ऑफ फोर्स' में नजर आएंगी दिशा पाटनी

प्रियंका चोपड़ा, दीपिका पादुकोण और तब्बू जैसी अदाकाराओं के बाद अब दिशा पाटनी ने भी हॉलीवुड में कदम बढ़ा दिए हैं। वे ऑस्कर विजेता निर्देशक केविन स्पेसी की सुपरनेचुरल थ्रिलर फिल्म 'हॉलीगार्ड्स सागा- द पोर्टल ऑफ फोर्स' में नजर आएंगी। इस फिल्म के जरिए वे इंटरनेशनल स्तर पर अपनी पहचान बनाने को तैयार हैं। हाल ही में दिशा ने स्पेसी के साथ शूटिंग के अनुभव साझा किए। फिल्म 'हॉलीगार्ड्स सागा' में दिशा के साथ डॉल्फ लुंडग्रेन, टायरेस गिब्सन, ब्रायना हिल्डेब्रांड और एरिक रॉबर्ट्स जैसे बड़े ग्लोबल स्टार्स अहम भूमिकाओं में हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू में दिशा ने हॉलीवुड में सफल होने के लिए जरूरी चीजों के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक्टर सिर्फ भारत में बैठकर इंटरनेशनल ऑडियंस, टैलेंट रिप्रेजेंटेशन और वीजा से जुड़ी मुश्किल प्रक्रियाओं को समझे बिना ग्लोबल रोल पाने की उम्मीद नहीं कर सकते।

केविन स्पेसी की तारीफ में कहा?

दिशा पाटनी ने वैरायटी इंडिया से बात करते हुए कहा, 'वे (केविन स्पेसी) कमाल के हैं। एक एक्टर होने के नाते, वे अपने एक्टरों को समझते हैं। एक्सपेरिमेंट करने के लिए काफी आजादी देते हैं। वे हमसे कहते थे कि हम अपने अनुभवों का इस्तेमाल करें। वह हमें ऐसे सवाल सोचने के लिए प्रोत्साहित करते थे, जैसे- 'आप ऐसी स्थिति

में कैसा रिएक्ट करेंगे?' 'क्या आप रोएंगे?' 'आप कैसा महसूस करेंगे?' 'आप अपनी भावनाएं कैसे जाहिर करेंगे?' हर सुबह, वे हमारे साथ बैठते थे और हमें सीन समझाते थे। मुझे यह बात बहुत खास लगी। मुझे नहीं लगता कि मैंने पहले किसी क्रिएटर के साथ ऐसा किया है।

अपने हॉलीवुड सफर पर बोलीं

एक्ट्रेस ने हॉलीवुड डेब्यू और ऑडिशन को लेकर कहा, 'पश्चिम में ऑडिशन टेम्पलेट पर बहुत जोर दिया जाता है। आपको चीजों के लिए ऑडिशन देना होता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपके लिए वह कितना आसान है और आपने किसके साथ साइन किया है। किस्मत भी इसमें भूमिका निभाती है। कभी-कभी, वे बस आपका काम देखते हैं और आपको प्रोजेक्ट और ऑडिशन ऑफर करते हैं। यह वीजा और दूसरी लॉजिस्टिकल चीजों पर भी निर्भर करता है। यह सब बहुत टेक्निकल है। आखिरकार, यह एक अलग देश है। लेकिन आपको वहां मौजूद रहना होगा। आप यहां भारत में बैठकर वहां रोल नहीं पा सकते। आप यहां से ऑडिशन दे सकते हैं, लेकिन सबसे अच्छा यही है कि आप वहां जाएं, कुछ समय के लिए रहें और उस पर काम करें। किसी भी देश के साथ ऐसा ही होता है'।



ऋतिक रोशन ने पूरी की 'जेलर 2' में कैमियो की शूटिंग

रजनीकांत इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'जेलर 2' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म की अभी शूटिंग हो रही है। बताया जाता है कि बॉलीवुड स्टार ऋतिक रोशन इस फिल्म में कैमियो करने वाले हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ऋतिक रोशन ने फिल्म में अपने कैमियो की शूटिंग पूरी कर ली है। एक्स पर आम नाम के एक वैरिफाइड यूजर ने एक तस्वीर शेयर की है। इसमें रजनीकांत और ऋतिक रोशन एक साथ नजर आ रहे हैं। नेल्सन दिलीप कुमार ने

'जेलर 2' में ऋतिक रोशन के लिए शानदार किरदार तैयार किया है। उनका एक दमदार सीक्वेंस है। इसके बाद रजनीकांत के साथ एक सीन है। यह एक दमदार कैमियो है, जिसे दर्शकों से तारीफ बटोरने के लिए डिजाइन किया गया है। उसका कैमियो फिल्म के एक अहम मोड़ पर आता है और कहानी को आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाता है। 'जेलर 2', रजनीकांत की ब्लॉकबस्टर एक्शन एंटरटेनर फिल्म 'जेलर' का सीक्वल है।

हिंदी-साउथ के बाद अब पंजाबी सिनेमा में डेब्यू करेंगे नवाजुद्दीन सिद्दीकी

नवाजुद्दीन सिद्दीकी इंडियन सिनेमा का एक बड़ा नाम हैं। उन्होंने अपने वर्सेटिलिटी से अपनी अलग पहचान बनाई है। लेकिन अब नवाजुद्दीन बॉलीवुड से इतर पंजाबी इंडस्ट्री में भी डेब्यू करने जा रहे हैं। खबरों के मुताबिक, वह पंजाबी भाषा की एक फिल्म से इंडस्ट्री में डेब्यू करने वाले हैं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेत्री सोनम बाजवा के प्रमुख रूप में नजर आने की संभावना है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस प्रोजेक्ट को गिप्पी ग्रेवाल का सपोर्ट मिलने की बात कही जा रही है। हालांकि, नवाजुद्दीन का रीजनल सिनेमा में यह पहला कदम नहीं है। वह पहले तेलुगु फिल्म 'संधव' और तमिल फिल्म 'पेड्डा' का हिस्सा रह चुके हैं, जिनमें उन्होंने रजनीकांत के साथ विलेन का रोल निभाया था। इसके बाद 'तुम्बाडू 2' आने वाली है, जो 2018 की ओरिजनल फिल्म का सीक्वल है। रिपोर्ट की मानें तो अब नवाजुद्दीन पंजाबी सिनेमा में अपनी शुरुआत करने वाले हैं। हालांकि, अभी तक इसको लेकर ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुई है।



और अमेरिकी सिंगर निक जोनस को बॉलीवुड की गपशप में काफी दिलचस्पी है। जोनस ब्रदर्स के एक पॉडकास्ट में बातचीत के दौरान प्रियंका ने बताया कि निक उनके लिए बॉलीवुड की खबरों का सबसे भरोसेमंद जरिया बन चुके हैं। प्रियंका के मुताबिक, बॉलीवुड में किसका क्या चल रहा है, इसकी जानकारी निक को उनसे भी ज्यादा रहती है। प्रियंका ने सुनाया एक दिलचस्प किस्सा इस दौरान प्रियंका ने एक मजेदार किस्सा सुनाते हुए बताया, 'कभी-कभी जब मैं किसी सोलिडिटी को मेरेज करके कहती हूँ कि 'अपने पार्टनर को मेरा प्यार देना', तो निक मुझे टोकते हैं और कहते हैं कि 'नहीं, उन दोनों का तो ब्रेकअप हो चुका है।' तब मुझे सच पता चलता

है।' जब निक के भाई केविन ने उनसे पूछा कि उन्हें ये सब कैसे पता चलता है, तो निक ने हंसते हुए कहा कि वह चुपके से सोशल मीडिया पर कुछ बॉलीवुड गॉसिप पेजों को फॉलो करते हैं, लेकिन वह उन पेजों का नाम नहीं बताएंगे। निक का मानना है कि बॉलीवुड सोलिडिटीज की कहानियां लगातार बदलती रहती हैं, इसलिए उन्हें पढ़ना काफी दिलचस्प लगता है।

प्रियंका और निक की जोड़ी

प्रियंका और निक की लव स्टोरी साल 2016 में सोशल मीडिया पर एक मेसेज से शुरू हुई थी। इसके बाद 2017 में दोनों पहली बार 'मेट गाला' इवेंट में एक साथ नजर आए। 2018 में दोनों ने डेटिंग शुरू की और इसी साल हिंदू और ईसाई रीति-रिवाजों से बेहद धूमधाम से शादी कर ली। 2022 जनवरी में उनके घर एक प्यारी बेटी का जन्म हुआ, जिसका नाम उन्होंने मालती मैरी चोपड़ा जोनस रखा है।



एक कलाकार को रियल में अपने किरदार जैसा बनने की जरूरत नहीं

बॉलीवुड के अनुभवी एक्टर अन्नू कपूर का कहना है कि किसी कलाकार को निजी सोच और उसके निर्माण गए किरदार को कभी एक जैसा नहीं समझना चाहिए। उनकी आने वाली कॉमेडी-ड्रामा फिल्म 'उत्तर दा पुतर' में वह एक ऐसे फिजिक्स प्रोफेसर का रोल निभा रहे हैं, जिसे वास्तु शास्त्र पर पूरा भरोसा होता है। दिलचस्प बात यह है कि असल जिंदगी में उनकी सोच इस किरदार से बिल्कुल अलग है। अन्नू कपूर कहते हैं, 'मैं खुद नास्तिक हूँ, लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि मैं किसी धर्म या किसी की आस्था का सम्मान नहीं करता। जब निर्माता संदीप कपूर ने मुझे इस किरदार के बारे में बताया तो मैंने बिना देर किए हां कह दी। एक एक्टर होने के नाते मुझे ऐसे रोल करना सबसे ज्यादा पसंद है, जो मेरी असली जिंदगी से बिल्कुल अलग हों।'

पर्सनल दिलचस्पी को उनकी एक्टिंग से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने हस्तरंखा और ज्योतिष जैसी चीजों पर कई किताबें पढ़ी हैं, लेकिन सिर्फ अपनी जिज्ञासा और जानकारी बढ़ाने के लिए। उनका मानना है कि उनकी पर्सनल दिलचस्पी को उनकी एक्टिंग से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए।

मैंने कभी किसी धर्म या किसी की आस्था का मजाक नहीं उड़ाया

अन्नू कपूर का कहना है कि कई बार उनके बयानों को गलत तरीके से पेश किया जाता है, जिससे बेजजह विवाद खड़े हो जाते हैं। उन्होंने साफ कहा, 'मैंने कभी किसी धर्म या किसी की आस्था का मजाक नहीं उड़ाया। मेरा इरादा कभी किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं रहा। हर इंसान को अपनी सोच और विश्वास रखने का पूरा अधिकार है और मैं उसका सम्मान करता हूँ।' एक्टर के मुताबिक, असली जिंदगी और पर्दे पर निभाए गए किरदार के बीच फर्क होना ही एक्टिंग की सबसे बड़ी खूबसूरती है। उन्होंने कहा, 'एक

कलाकार को असल जिंदगी में अपने किरदार जैसा बनने की जरूरत नहीं होती। उसकी जिम्मेदारी सिर्फ इतनी होती है कि वह अपनी एक्टिंग से दर्शकों को उस किरदार पर भरोसा दिला सके।' अपनी फिल्म 'उत्तर दा पुतर' के बारे में बात करते हुए अन्नू कपूर ने कहा कि यह फिल्म दर्शकों को खूब

हंसाएगी और साथ ही एक अच्छा संदेश भी देगी। उन्होंने लोगों से फिल्म का ट्रेलर आखिर तक देखने की अपील की। उनके मुताबिक, जब फिल्म में उनकी पत्नी उनसे कहती है, 'इस वास्तु के चक्कर में तुम डरपोक हो गए हो', तो यही एक संवाद पूरी कहानी का सार बता देता है।

रविंदर सिवाच के निर्देशन में बनी 'उत्तर दा पुतर'

रविंदर सिवाच के निर्देशन में बनी 'उत्तर दा पुतर' में अन्नू कपूर के साथ रुखसार रहमान, बृजेंद्र काला, पवन मल्होत्रा, इशिताक खान, जीवेशु अहलवालिया, राजेंद्र सेठी, सुमित गुलाटी और नितिन अरोड़ा भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे।

